॥ श्रीः ॥

श्रीमन्महाभारतानुशासनिकपर्वान्तर्गत-

विष्णुसहस्रनामस्तोत्र

भाषाटीकासहित ।

जो टीका

वैश्यमाहेश्वरी नानालाल सोमाणीने औदीच्यज्ञाति

पण्डित-रामचन्द्रजीसे विरचित कराई.

वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

खेतवाडी ७ वीं गली खम्वाटालेन,

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेसमें

मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९७२, शके १८३७.

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटालैन निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छापकर यहीं प्रकाशित किया.

श्रीविष्णवे नमः ।

सूचना।

श्रीपरब्रह्मपरमेश्वरसगुणनिर्गुणरूप सच्चिदानंदके चरणारविंदमें मनवाणीकायसे अनंतकोटि नमस्कार करके यह सत्पुरुषोंका दासानुदास वैश्य माहेश्वरी नानालाल सोमाणीने यथार्थ नामसहस्र औदीच्यज्ञाति पंडितरामचंद्रजी रईसडीडवानासे श्रीविष्णुसहस्रनामका अर्थ शङ्करभाष्यानुकूल देशभाषामें शुद्ध लिखवायके सब सुज्ञजनोंसे हाथ जोड़के विनती करताहै जहाँ अर्थमें वा लिपीमें भूलचूक होय सो इसतुच्छबुद्धि अत्यंत अबोधदासपर कृपा करके सुधारदें. अर्थ जिस नामके दो तीनहैं उसपर अंकलिखाहै जहां श्लोक पूराहै उसकाभी अंकहै नामोंकी संख्याकाभी अंक प्रतिपत्रमें लिखाहै॥ श्लोकः॥ शराब्धिगोभूमितविक्रमाब्दे चैत्राभिधेमासि वलक्षपक्षे॥ सेनानिवेशाख्यपुरे व्यलेखि श्रीरामचन्द्राभिधपंडितेन ॥ १ ॥ श्रीरस्तु ॥

अथ

श्रीविष्णुनामसहस्रम् ।

भाषाटीकासमेतम् ।
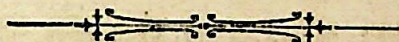
यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात् ॥
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे (१)

वैशंपायन उवाच ।

श्रुत्वा धर्मानशेषेण पावनानि च सर्वशः ॥ युधिष्ठिरः शांतनवं पुनरेवा-

श्रीगणेशाय नमः॥वैशंपायनजी बोले कि—युधिष्ठिर नाम युद्धमें न भागनेवाले ऐसे धर्मराजाने सब पवित्रकरनेवाले धर्म्मोंको शंतनुके पुत्र भीष्मपितामहसे अशेष नाम संपूर्ण सर्वधर्म जैसे—आपद्धर्म, राजधर्म, मोक्षधर्म, दानधर्मादिक, वो धर्म कैसे हैं, कि पावननाम पवित्रकरनेवाले सर्वशः नाम सब तरहसे पावन हैं श्रवणमनननिदिध्यासनादिक वा सब प्रकारके धर्म व्रत उपासना उपवास

ऽभ्यभाषत ॥ १ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ किमेकं दैवतं लोके किं वाप्येकं परायणम् ॥ स्तुवन्तः कं कमर्चन्तः प्राप्नुयुर्मानवाः शुभम् ॥ २॥ को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः ॥ किं

प्रायश्चित्तादिकको भीष्मजीसे सुनकर फेर पूँछा॥ १॥ युधिष्ठिरने कहा इस लोकमें एक बड़ा देवता कौन है अथवा एक प्राप्त होनेके लायक कौन है और किसके जप करनेसे किसकी पूजा और किसकी स्तुति करनेसे मनुष्यका कल्याण होताहै ॥ २ ॥ सब धर्मोंमें कौन धर्म आपके परममतसे बड़ा है और किस नामके जप करनेसे प्राणी जन्ममरणरूपी संसारके बंधनसे छूट जाताहै(परममत नाम उत्तम मत जप तीन तरहका है १ऊंचेशब्दसे २ मध्यमस्वरसे ३ मनसे, जो जन्म लेता रहै उसका नाम जंतुहै)युधिष्ठिरने यही पांच प्रश्न किये १कौन एक बड़ा देवता है२कौन प्राप्त होने लायक है३किसकी पूजा और स्तुतिकरनेसे आदमीका

जपन्मुच्यते जन्तुर्जन्मसंसारबन्धनात् ॥ ३ ॥ भीष्म उवाच ॥ ॥ जगत्प्रभुं देवदेवमनंतं पुरुषोत्तमम् ॥ स्तुवन्नामसहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः ॥ ॥४॥ तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या पु-

भला होताहै ४ सब धर्मोंमें आपके परममतसे कौन धर्म बड़ाहै ५ किस नामके जपसे फेर जन्म नहीं होता ॥ ॥३॥ भीष्मने उत्तर दिया (जिससे सब शत्रु डरें सो भीष्म)आदमी सदा उठकर जगत्के प्रभु नाम स्वामी और देवतोंके देवता अनंत पुरुषोत्तमके सहस्रनामसे स्तुति करनेसे संसारसे छूट जाताहै सब स्थावर जंगमका नाम जगत् है,उसके प्रभु अनंत जिसका अंत नहीं और किसी देश किसी काल किसी वस्तुमें जिसको नियत न करसकै पुरुषोत्तम नाश होनेवाले और चिरजीवी रहनेवालोंसे परे॥४॥सहस्रनामसे उसकी स्तुति सदा निरंतर जो पुरुष करताहै वह जन्ममरणसे छूट जाताहै उसी अव्ययनाम अविनाशी पुरुषकी भक्ति

रुषमव्ययम् ॥ ध्यायन्स्तुवन्नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च ॥ ५ ॥ अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोकमहेश्वरम् ॥ लोकाध्यक्षंस्तुवन्नित्यं सर्वदुःखातिगो भवेत् ॥ ६ ॥ ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्तिवर्धनम् ॥ लोकनाथं मह-

सहित नित्य पूजा और ध्यानपूर्वक स्तुति नमस्कार करनेसे यजन करनेसे पुरुष सबदुःखसे छूटजाताहै॥ ॥५॥आदिअंतसे रहित विष्णु सब लोकके महाईश्वर नाम ब्रह्मादिक ईश्वरोंके ईश्वर लोकाध्यक्ष नाम सबलोकोंके साक्षी अर्थात् द्रष्टा सब लोकके स्वामीकी स्तुति करनेसे सर्वदुःख नाम तापत्रयसे छूटजाताहै ॥६॥ ब्रह्मण्य सब धर्मोंके जानने वाले प्राणियोंकी कीर्ति बढ़ानेवाले लोकके नाथ अर्थात् जिससे लोग मांगतेहैं वा लोकके शिक्षा देनेवाले महद्भूत महत् नाम ब्रह्मविद्यापूर्ण भूत नाम परमार्थ अथवा महत्नाम पूज्य भूत नाम सत्ता अथवा पिशाचादिकरूपसे पूज्य सर्वभूत

द्भूतं सर्वभूतभवोद्भवम् ॥ ७ ॥ एष
मे सर्वधर्माणां धर्मोऽधिकतमो मतः॥
यद्भक्त्या पुंडरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नरः

भवनाम संसार और जिससे उत्पत्ति संसारकी है उस-
को सर्वभूतभवोद्भव कहतेहैं ॥७॥ सब वेदके कहेहुए बड़े
बड़े धर्मोंमेंसे बहुत बड़ा धर्म यही है जो पुंडरीकाक्षकी
स्तुतिसे भक्तिपूर्वक पूजा सदा करता है यही हमारा
मत है ॥ पुंडरीक हृदयकमलमें प्रकाशवानका नाम है
अक्ष नाम मंदिर और स्तुति करना सर्व धर्मोंमें
अधिक है इसमें प्रमाण देतेहैं विष्णुपुराणका वचन ॥
ध्यायन्कृते यजन्यज्ञैस्त्रेतायां द्वापरेर्चयन् ॥ यदाप्नोति
तदाप्नोति कलौ संकीर्त्य केशवम् ॥ १ ॥ मनुकावचन॥
जप्येनैव तु संसिध्येद्ब्राह्मणो नात्र संशयः॥ कुर्यादन्य-
त्र वा कुर्यान्मैत्रो ब्राह्मण उच्यते ॥ १ ॥ जपस्तु सर्व
धर्मेभ्यः परमो धर्म उच्यते॥ अहिंसया चभूतानांजप
यज्ञः प्रवर्त्तते ॥ ॥ इति महाभारते ॥ यज्ञानां जप-

सदा ॥ ८ ॥ परमं यो महत्तेजः परमं
यो महत्तपः ॥ परमं यो महद्ब्रह्म पर-
मं यः परायणम् ॥ ९ ॥ पवित्राणां प-
वित्रं यो मंगलानां च मंगलम् ॥ दैव
यज्ञोस्मीति भगवद्वचनम्॥८॥जोपरमतेज है कि सूर्य
उसी तेजसे सब जगत्को प्रकाश करतेहैं और जिस
तेजसे चांद और अग्नि प्रकाशितहैं और बडा तपनाम
आज्ञा देनेवाला अंतर्यामीरूप हैं ॥यद्भयाद्वाति वातोयं
सूर्यस्तपति यद्भयात् ॥ वर्षतीन्द्रो दहत्याग्निर्मृत्युश्चर-
ति यद्भयात् ॥ जो परब्रह्म जो सत्य है ज्ञानरूप है अ-
नंत है महत् नाम पूज्य जो परायणनाम जहाँ जा-
यके फेर नहीं आवते ॥ ९ ॥ सब तीर्थोंको जो पवित्र
करै ध्यानंसे दर्शनसे कीर्तनसे स्तुतिकरनेसेपूजन स्म-
रण प्रणामकरनेसे सबपापोंकी जड खोद डालतेहैं सो
परमपवित्र पुण्यपाप जो संसारके हेतुहैंउनका कारण
अज्ञान है उसका नाश आत्मज्ञानसे जो करै सोसबप-
वित्रोंसे पवित्रहै प्रमाण"कलावपि च दोषाढ्येविषया

तं देवतानां च भूतानां योऽव्ययः पि-
ता ॥ १० ॥ यतः सर्वाणि भूतानि भवं-
त्यादियुगागमे ॥ यस्मिंश्च प्रलयं
सक्तमानसः ॥ कृत्वापि सकलं पापं गोविंदं संस्मरञ्छु-
चिः ॥१॥ शाठ्येनापि नमस्कारः प्रयुक्तश्चक्रपाणये॥
संसारस्थूलबंधानामुद्वेजनकरो हि सः" ॥२॥ मंगल
नाम कल्याण सब मंगलोंके मंगल किंतु परमकल्याण
रूप वा उसके साधन देवतोंके देवताभूत कहैं प्राणि-
योंके एकपिता नाम पालनहार कैसे पिता कि, अव्यय
जिसका नाश नहीं वही इसलोकमें एक देवता हैं यह
उस प्रश्नका उत्तर है ॥ किमेकं दैवतं लोके इत्यादि॥
प्रमाण-ज्ञानह्रदे ध्यानजले रागद्वेषमलापहे॥ यः स्नाति
मानसे तीर्थे स याति परमां गतिम् १ ॥ आत्मानदी
संयमतोयपूर्णा सत्यावहा शीलतटा दयोर्मिः॥ तत्राभि
षेकं कुरु पांडुपुत्र न वारिणा शुध्यति चांतरात्मा॥२॥
इति महाभारते ॥ १० ॥ जिससे सत्ययुगके प्रारंभमें
सब प्राणी उत्पन्न होते हैं और युगके क्षय नाम महाप्रल-

यान्ति पुनरेव युगक्षये ॥ ११ ॥ तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते॥ विष्णोर्नामसहस्रं मे शृणु पापभयाप-हम् ॥ १२ ॥ यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः ॥ ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये १३ हरिः ॐ ॥ विश्वं विष्णुर्वषट्कारो

यमें और प्रलयके पहिले भी फेर सब जीव जिसमें लय होतेहैं ॥११॥ हे भूपति ! उसी लोकके मालिक जगतके नाथ जो विष्णु तिनका सहस्रनाम जो पाप और भयको नाशकरनेवालाहै उसको मन चित्त लगा-यके हमसे सुनो ॥ १२ ॥ जिन गुण सहित नामोंको महात्मा लोगोंने प्रसिद्ध किया है और सब ऋषिलो-गोंने गायाहै उनको मैं भूतये नाम धर्म अर्थ काम मोक्ष मिलनेके वास्ते कहता हूं ॥ १३ ॥

सहस्रनामप्रारंभः॥ विश्वम् ॥ जगत्का कारणरूप

भूतभव्यभवत्प्रभुः ॥ भूतकृद्भूतभृ-

परब्रह्म१अथवा सब जगत्रूप है२जो संसारको बना-
यके आप उसमें प्रवेसकरै३प्रलयमें सबजगत् जिसमें
समायजाय४प्रणवरूप५॥ एवंसर्वेषुभूतेषुभक्तिरव्यभि
चारिणी॥कर्तव्या पंडितैर्ज्ञात्वा सर्वभूतमयं हरिम् १॥
विष्णुः॥जो सबमें व्यापकहै१किसीदेश कीसी काल
कीसी पदार्थमेंजिसकोनियत न करसकै किंतु सबदेश
सबकाल सबबस्तुमें निरंतर एकाकार व्याप्त है॥२॥
जिसकी शक्ति सबमेंभरीहै॥३॥वषट्कारः॥वषट्कार
यज्ञको कहतेहैं और ब्रह्म और देवतोंको भी कहतेहैं१
जिसके निमित्त होम यज्ञादिक हों ॥२॥भूतभव्यभ-
वत्प्रभुः॥भूत भविष्य वर्त्तमान तीनों कालके स्वामी॥
भूतकृत्॥ रजोगुणके आश्रयसे ब्रह्मारूप होके प्राणि-
योंके पैदाकरनहार१तमोगुणको धारण करके रुद्ररू-
पसे जगत्को काटतेहैं वा नाशकरतेहैं॥५॥भूतभृत्॥
सतोगुणसे विष्णुरूप होके सबभूतोंके पालनहार और
रक्षक१शेषरूपसे जगत्को धारणकरनेवाले २ अनंत

द्भावो भूतात्मा भूतभावनः ॥ १४ ॥
पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमा-
गतिः॥अव्ययःपुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽ

रूपसे जगत्को पोषणकरनेवाले ॥३॥ भावः ॥ स-
त्तारूप जिसको नित्यकहतेहैं ॥॥भूतात्मा॥ ॥प्राणि-
योंके अंतर्यामी॥भूतभावनः ॥ प्राणियोंके उत्पन्नक-
रनेवाले ॥ १४ ॥ पूतात्मा॥त्रिगुण और जन्मकर्मके
दोषजिसमें नहीं१०नामपरमात्माबहुतबड़ीहैमायाश
क्ति जिसकी और सबमें निरंतर व्याप्तहैं१॥नित्यशुद्ध
बुद्ध मुक्त स्वभाव २ नित्य जो तीनों कालमें रहे शुद्ध
रागादिकसे रहित बुद्ध आपही प्रकाशवान् और सदा
आनंदरूप मुक्त मायाकेबंधनसे छूटा हुआ ॥मुक्तानां
परमागतिः॥ मुक्त लोग जो रागद्वेषभयमें छूटेहैंउन-
की परमा नाम उत्तम गतिरूप जहाँ जायके फेर न
आवैं ॥ अव्ययः॥ जिसमें विकार वा नाश नहीं ॥
पुरुषः ॥ ॥ पुर नामशरीर वा ब्रह्म जो शरीरमें अ-
थवा ब्रह्ममें वास करै सो पुरुष॥नवद्वारं पुरं पुण्यमे-

क्षर एव च ॥ १९ ॥ योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः ॥ नारसिंहवपुः

तैर्भावैः समन्वितम् ॥ व्याप्य शेते महात्मायस्तस्मात्पुरुष उच्यते॥ १॥इति महाभारते॥ जोसबके पहिले था वो पुरुष ॥२॥सत्त्वगुण जहाँ अधिक होय वहाँ रहनेवाले३अनेक मनोरथोंके देनेवाले ४ पुर नाम संसारकोजो प्रबलकालसे नाशकरै सो पुरुष५जिससे सब जगत् भराहै और जो सब जगत्में घूमता फिरताहै ६॥ साक्षी ॥ साक्षाच्चैतन्यरूप सबको देखनेवाले ॥ क्षेत्रज्ञः ॥ क्षेत्र नाम शरीरको जो जानै सो क्षेत्रज्ञ॥क्षेत्राख्यानि शरीराणि तेषां चैव यथासुखम्॥ तानि वेत्ति स योगात्मा ततःक्षेत्रज्ञ उच्यते॥ १॥अक्षरः जो कभी न टलै सदा एकसा थिर रहै एवं नाम वही क्षेत्रज्ञ है॥ १९ ॥ योगः ॥ ॥ ज्ञानेंद्रिय और मनको जीतकर जीवात्मा परमात्मा दोनोंको एक जाननेको योग कहतेहैं इसके अभ्याससे जो मिलै सो॥योगो योगविदांनेता ॥ योगकेजाननेवाले योगविद् उनके

श्रीमान् केशवः पुरुषोत्तमः ॥ १६ ॥

नेतानाम योगक्षेमकरनेवाले॥योगअनमिली वस्तुकी प्राप्तिक्षेम प्राप्तकी रक्षा ॥ प्रधानपुरुषेश्वरः ॥ ॥ प्रधान नाम प्रकृति जिसको माया कहतेहैं । पुरुष नाम जीव दोनोंके ईश्वर२०नाम॥नारसिंहवपुः॥जिसके शरीर- में आदमी और सिंहका स्वरूप होय ॥ श्रीमान् ॥ जिसकी छातीमें सदा लक्ष्मीका चिह्न है॥ ॥केशवः॥ जिसके बाल बहुत सुंदर होय १ क नाम ब्रह्मा अनाम विष्णु ईश नाम रुद्र तीनौ जिसके वशमेंहैं सो केशव२ केशी दैत्यके मारनेवाले ॥३॥पुरुषोत्तमः॥ जो पुरु- षोंमें उत्तम नाम जीव औरईश्वरदोनोंसे परे शुद्धब्रह्म॥ भगवद्गीताप्रमाण॥यस्मात्क्षरमतीतोहमक्षरादपिचोत्त मः॥अतोस्मि लोके वेदेच प्रथितः पुरुषोत्तमः॥ १६॥ सर्वः॥सत् और असत्के उत्पत्ति स्थिति विनाशका स्थान॥ शर्वः ॥ सबोंका संहार करानेवाला आपही सबको संहारकरै॥शिवःतीनोंगुणोंसे रहित सिद्धिवाले

सर्वः शर्वः शिवःस्थाणुर्भूतादिर्निधिर-
व्ययः ॥ संभवो भावनो भर्त्ता प्रभवः
प्रभुरीश्वरः ॥ १७ ॥ स्वयंभूः शंभुरा-

वही ब्रह्मा वही विष्णु वही रुद्रहै यह श्रुति है शिवके नामसे विष्णुकी स्तुति है ॥ स्थाणुः ॥॥ स्थिरभाव॥ भूतादिः ॥ सबभूतोंका आदिभूत॥ निधिरव्ययः॥प्रल-यके समयमें जिसमें सब लय होय सो निधि और जो सदा रहै कभी नष्ट न होय सो अव्यय यह दो मिलके एक नामहैं३०नाम॥संभवः॥अपनी इच्छासे भलीतरह आपही होय॥चौथे अध्यायमें गीताजीमें कहाहै धर्मके स्थापनके वास्ते युगयुगमें मैं होताहूँ स्वेच्छासे गर्भा-दिकदुःखोंसे रहित ॥ भावनः ॥ सब भोक्ता जीवोंको फल देनेवाला ॥ भर्ता॥प्रपंचको अधिष्ठान होके धारण करैं॥प्रभवः॥जिस्से पंचमहाभूत अपने विस्तारसमेत पैदा होयँ अवतारादिक जिसके उत्तमजन्महैं॥प्रभुः॥ सब तरहकी कृपामें अत्यंत सामर्थी ॥ ॥ ईश्वरः ॥ उपाधिरहित जिसका ऐश्वर्यहै यही सबका ईश्वरहै १७॥ ॥स्वयंभूः॥॥जो आपही विना किसीकी सहायताके

दित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः ॥ अना-
दिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः
प्रगटहोय १ जो आप स्वतंत्र होय२ ॥ ॥ शंभुः॥जो
भक्तोंको सुख देवे ॥॥ आदित्यः ॥॥ सूर्यमंडलमें जो
सुवर्णमय पुरुष बैठाहै१बारहों सूर्यमें विष्णुनाम सूर्य
बारहों सूर्यकेनामविष्णु १चक्र२अर्यमा३धाता४त्वष्टा
५पूषा६विवस्वान्७सविता८मित्र९वरुण१०अंशुमान्
११भग१२आदित्यानामहं विष्णुः॥गीताजीमें कहाहै
अखंडितपृथ्वीके पति जैसे एक सूर्य अनेक जलपात्रमें
अनेक देखाई देतेहैं वैसे एक आत्मा अनेकरूप होके
अनेक शरीरमें देखाई देतेहैं ॥ पुष्कराक्षः ॥ ॥ कम-
लके पत्रसे हैं नेत्र जिसके ॥ ४० नाम ॥ महास्वनः॥
जिसका शब्द बड़ा है ॥ जिसका शब्द वेदहै २ ॥ ॥
अनादिनिधनः॥॥जिसका जन्म और नाश नहीं ॥
॥ धाता ॥ शेष नाग और कच्छ और सूर्यचंद्ररूप
और सूर्यचंद्ररूपहोकर जगत्को धारणपोषण करने-
वाले॥विधाता ॥॥ कर्म और कर्मके फलोंका रचने-
वाला॥ कर्म दर्शपौर्णमासादिक यज्ञ और उनके फल

॥ १८ ॥ अप्रमेयो हृषीकेशः पद्म-नाभोऽमरप्रभुः ॥ विश्वकर्मा मनुस्त्व-

स्वर्गादिकके बनानेवाले १ शेषनागादिकके धारण करनेवाले२ ॥॥ धातुरुत्तमः॥पृथिव्यादिक सब धातु-ओंसे उत्तम चैतन्यरूपधातु १ब्रह्मासेभी उत्तम यह दो नाम हैं एक धातु दूसरा उत्तम कार्यकारणरूपसे जगत् के धारणकरनेवाले चैतन्य उत्तम सब ऊपर जानेवाले हिरण्यगर्भादिकोंसेभी उत्तमनाम बहुत ऊपरजानेवाले भाष्यकार एकही नाम गिनते हैं ॥१८॥ अप्रमेयः ॥ जिसकी प्रमा नाम यथार्थ ज्ञान प्रत्यक्ष अनुमान उप-मान शब्दादिकोंसे न होसके॥हृषीकेशः ॥ इंद्रियोंके स्वामी १ सूर्यचन्द्ररूप होके अपने केश नाम किर-णसे जगत्का भला करतेहैं ॥ महाभारतके दानधर्ममें प्रमाणहै॥सूर्याचंद्रमसोः शश्वदंशुभिः केशसंज्ञितैः ॥ बोधयन्स्वापयंश्चैव जगदुत्तिष्ठते पृथक्।बोधनात्स्वाप नाच्चैव जगतो हर्षणं भवेत्। हृषीकेशोहमीशानो वरदो लोकभावनः ॥ ॥ पद्मनाभः ॥ जिनकी नाभिमें सब

ष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः ॥ १९ ॥
अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः
प्रतर्दनः ॥ प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं

जगत्का कारणरूप कमलहै ॥ अमरप्रभुः ॥ देवतोंके स्वामी ॥ विश्वकर्मा ॥ ॥ जिसकी क्रिया जगत्है ॥ जिसकी शक्तिसे सब जगत् क्रिया करतेहैं३जैसे विश्व-कर्मा अपनी शक्तिसे सब विचित्र काम करते हैं वैसे ईश्वरभी अपनी मायासे चित्र विचित्र रचना करते हैं इसवास्ते विश्वकर्मा नामहै १॥ ५० नाम ॥ मनुः ॥ जो मननकरै सो मनु १ मंत्ररूप २ प्रजापतिमनु ३॥ त्वष्टा॥ जो संहारकालमें सब संसारको सूक्ष्मरूपकरके अपने में मिलायले॥स्थविष्ठः ॥ सब स्थूलोंसे बहुत स्थूल ॥ स्थविरः ॥ पुराने ॥ ध्रुवः ॥ जो सदा अचल रहै यह दोनोंपदसे एक नाम ठहरा॥पुराने कैसे कि अचल ॥१९॥अग्राह्यः॥जिसका ग्रहण इंद्रियोंसे न होसके॥ शाश्वतः ॥॥ सबकालमें रहनेवाले॥कृष्णः॥कृषि नाम सत्ता ण नाम सुख ॥प्रमाण-कृषिर्भूवाचकः शब्दोणश्च

मंगलं परम् ॥ २० ॥ ईशानः प्राणदः प्राणो जेष्ठःश्रेष्ठः प्रजापतिः ॥ हिरण्य-

निर्वृतिवाचकः ॥ विष्णुस्तद्भावयोगाच्च कृष्णोभवति शाश्वतः॥ १॥ अर्थात् सत्तारूप औरसुखरूपहै १ जिस का वर्ण श्याम है२॥ लोहिताक्षः॥ लालडोरेहैंजिसकी आंखमें॥ प्रतर्दनः। प्रलयमेंजगत्केनाशकर्ता॥ अभूतः॥ सबऐश्वर्यसे पूर्ण६०नाम॥ त्रिककुब्धाम॥ ऊपरनीचेबीच तीनों दिशाके आधार वा उनके प्रकाश करनेवाले पवित्रम् ॥ ॥ पवित्र करनेवाले ऋषिरूपदेवतारूप मंत्ररूपहोके॥ मंगलंपरं ॥ सबमंगलोंसे उत्तम॥ विष्णु पुराणका प्रमाण ॥ अशुभानि निराचष्टे तनोतिशुभसंततिम्॥ स्मृतिमात्रेण यत्पुंसां ब्रह्म तन्मंगलं विदुः ॥ ॥२०॥ ईशानः॥ ॥ जीवमात्रके प्रेरक॥ प्राणदः॥ प्राणके दाता १ कालरूप होके प्राणके हर्ता२ प्राण नामइंद्रियों को दर्शन श्रवण मननकरनेसे शुद्धकरनेवाले३ इंद्रि-योंको छेदन करनेवाले नाम अंधा गूँगा बहिरा कर-

गर्भो भूगर्भो माधवोमधुसूदनः ॥२१॥
ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः

नेवाले ४॥ ॥ प्राणः ॥ ॥ श्वास लेनेवाले १ जीवरूप वा परमात्मारूपसे२प्राणस्वरूप३॥ज्येष्ठः॥ ॥ सबके बड़ेबूढ़े॥ ॥ श्रेष्ठः॥अतिप्रशंसा योग्य ॥ प्रजापतिः॥ ईश्वररूपहोके ब्रह्मासे लेकर तिनुकेतक सब प्रजाके पति नाम पालनहार॥हिरण्यगर्भः॥ सुवर्णरूप अंडेके भीतर रहनेवाले १ ब्रह्मारूप २ ॥ भूगर्भः ॥ सबकी आधारभूत पृथ्वी जिसके गर्भमें है॥माधवः॥ लक्ष्मी के पति१मधुविद्याजो छांदोग्य उपनिषदमें कहीहैउस विद्यासे जो जाननेवाले वा विद्यासे जो जानाजाय२ मधुसूदनः ॥ मधुनाम दानवके हंता॥२१॥ईश्वरः ॥ ॥ सर्वशक्तिमान् ॥विक्रमी॥शूर॥धन्वी॥धनुधारी ॥ भगवतवचनसे प्रमाण–रामःशस्त्रभृतामहम्। मेधावी॥ सबशास्त्रोंके धारणकरनेकी बुद्धि रखनेवाले॥विक्रमः तीनों लोकमें पांव फैलावने वाले विराट्रूप १ वि

क्रमः ॥ अनुत्तमो दुराधर्षःकृतज्ञः कृति-
रात्मवान्॥२२॥सुरेशःशरणं शर्म विश्व-
रेताः प्रजाभवः ॥ अहःसंवत्सरो व्या-

नाम पक्षी गरुडपर सवार होके चलनेवाले ॥क्रमः॥ जो सबमें आपही चलै १ ॥ प्राणियोंके चलावने-वाले २ ॥ अनुत्तमः ॥ जिससे कोई दूसरा उत्तम नहीं ३॥ ८० नाम ॥ दुराधर्षः ॥ जिसको दैत्यलोग अपना प्रताप न दिखायसकैं॥कृतज्ञः॥जीवोंके कर्मों-के जाननेवाले १ थोडी पूजनको बहुत करके मानने वाले फलफूल पत्र चढावनेसे मुक्तिफल देनेवाले २ ॥ कृतिः ॥ सबको पुरुषार्थरूप १ पुरुषोंके क्रियारूप २ पुरुषकी कृपामें जो प्रेरक समझा जाय क्योंकि सबके आधार रूपहैं ॥३॥ आत्मवान् ॥ ॥ अपनी महिमामें जो सदा स्थिर रहै ॥ २२ ॥ ॥ सुरेशः ॥ देवतोंके स्वामी ॥शरणम्॥दुःखीजनोंके दुःखहर्ता ॥ शर्म ॥ ॥परमानंदरूप ॥ ॥ विश्वरेताः॥ ॥ जगत्के कारण ॥ प्रजाभवः ॥ ॥ सब प्रजाके उत्पन्न करने वाले ॥ अहः ॥ प्रकाशरूप दिनकी तरह ॥

लः प्रत्ययः सर्वदर्शनः ॥२३॥ अजः
सर्वेश्वरः सिद्धःसिद्धिःसर्वादिरच्युतः॥
वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिः-

संवत्सरः॥कालरूपविष्णु॥९०नाम॥ व्यालः ॥ सांप की तरह जो पकड़नेमें न आवे जैसे मस्त हाथी नहीं पकडा जाय वैसे दैत्यादिक उनको नहीं वशकर सकते ॥ प्रत्ययः ॥ ॥ प्रतीतिरूप ॥ सर्वदर्शनः ॥ सबकी आँखोंसे आत्मारूप होकर आप देखनेवाले ॥२३॥ अजः॥ जिसका जन्म नहीं ॥ सर्वेश्वरः सब ईश्वरोंके ईश्वर ॥ सिद्धः ॥ सदा बनेबनाये जैसे उचितहैं वैसे तैयार ॥ सिद्धिः ॥ सबजगत्में चैतन्यरूप १ सबसे उत्तमफलरूप क्योंकि स्वर्गादिक नाशवान हैं और परमेश्वरकी प्राप्ति अविनाशीहै २॥ सर्वादिः ॥ सब जातके आदि॥अच्युतः॥ जिसकी सामर्थ्य तीनों कालमें न घटै ॥१०० नाम॥ वृषाकपिः॥ वृष नाम धर्म जो सब कामनाको बरसावे १ क नाम जल जो पृथ्वीकी रक्षा जलसे करै सो कपि अर्थात् वराह भग-

सृतः॥२४वसुर्वसुमनाःसत्यःसमात्मा

वान् दोनों पदसे एक नाम वृषाकपि भया तिसका अर्थ धर्मरूप वराहरूप ॥ इसमें व्यासका प्रमाणहै। कपिर्वराहश्रेष्ठश्च धर्मश्च वृष उच्यते॥ तस्माद्वृषाकपिं प्राह कश्यपो मां प्रजापतिः १॥अमेयात्मा ॥ जिसके स्वरूपका कोई प्रमाण न करसकै कि इतनाहै॥सर्वयोगविनिःसृतः॥ सब संबंधसे रहित १सब शास्त्रमें कहे- हुए जो योग हैं उनसे जानेगये २ ॥२४ ॥ वसुः॥ प्राणियोंमें वसनेवाले१जिसमें सब प्राणी वसैं२आठौं वसुमें पावक नाम वसु ३ ॥ वसुमनाः॥उत्तम है मन जिसका १ प्रशस्त रागद्वेषादिक क्लेशसे और मानम- दमोहादिक उपक्लेशादिसे रहित ऐसा मन जिसका होय सो वसुमनाः ॥ सत्यः॥ सत्यरूप जो तीनों कालमें अबाधित है १ मूर्तिमान् अमूर्तिमान् सत् नाम प्राण त् नाम अन्न य नाम सूर्य प्राणरूप सूर्यरूप अन्नरूप है २ भक्तोंमें जो क्षमाशीलहै ४ ॥ समात्मा ॥ सम नाम रागद्वेषादिकसे रहित है आत्मा जिसकी १

संमितः समः ॥ अमोघः पुंडरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः॥२५॥रुद्रो बहुशि-

सबभूतोंमें एकहै आत्मा जिसकी २ ॥ संमितः । सबपदार्थोंसे मित नाम प्रमाणकियेगये १ असंमितनाम किसी पदार्थसे जिसका प्रमाण नहीं होसकता२ समः सबकालमें सबविकारसे रहित १ मानामलक्ष्मीकेसहित २ ॥ अमोघः॥ जिसके पूजा स्तुति स्मरण निष्फल नहीं १ जिसका संकल्प व्यर्थ नहीं होता२॥ ११०नाम॥ पुंडरीकाक्षः॥ हृदय कमलमें अक्षनाम घर है जिसका १॥ कमलके पत्रसे नेत्र हैं जिसके २ ॥ वृषकर्मा ॥ धर्मयुक्त हैं कर्म जिसके ॥ वृषाकृतिः ॥ धर्मके वास्ते जो आकृति नाम अवतार धारण करतेहैं२५॥ रुद्रः ॥ संहारकालमें प्रजाको रुदन करावनेवाले १ रुदननाम दुःख जो दुष्टोंको दुःख दे सो रुद्र२॥रुदनाम दुःख वा दुःखका कारण उसको जो द्रवावै नाम नाश करै सो रुद्र ३॥ लिंगपुराणका वचनप्रमाण॥रुदुःखं

रा बभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः ॥ अ-
मृतःशाश्वतःस्थाणुर्वरारोहो महात-
पाः ॥ २६ ॥ सर्वगः सर्वविद्भानु-

दुःखहेतुं वा विद्रावयति यः प्रभुः॥ रुद्र इत्युच्यते त-
स्माच्छिवः परमकारणम् १॥बहुशिराःअनंतशिरवाले
॥ बभ्रुः ॥ लोकके धारण करनेवाले वा पालनकरने
वाले॥विश्वयोनिः॥जगत्के कारण ॥ शुचिश्रवाः॥
पवित्रकारक हैं जिनके नाम वा यश ॥ अमृतः ॥
जो न मरे॥शाश्वतःस्थाणुः॥जो निरंतर स्थिर १२०
नाम ॥ वरारोहः॥उत्तमहै आरोहनाम अंक जिसका
१श्रेष्ठ है शेषशय्याजिसके वास्ते२॥श्रेष्ठ है जीवोंका
आरोहनाम चढना जिसपदमें अर्थात् जिसपदकोपहुं-
चके फेर न आवै॥महातपाः॥ समग्र सृष्टिका पूर्णज्ञा-
न है जिसको१॥बडाहै जिसका ऐश्वर्य प्रताप२॥२६॥
सर्वगः॥जो सब जगह कारणरूप होके व्याप्तहै सर्व-
वित्॥सब जाननेवाला१सत्यसंकल्प है इसवास्ते जो
संकल्पकरते हैं सोई होताहै२॥भानुः॥जो प्रकाशमान्
है जो सर्वविद और प्रकाशमान् है सोई सर्वविद्भानुः

विष्वक्सेनो जनार्दनः ॥ वेदो वेदवि-
दव्यंगो वेदांगो वेदवित्कविः ॥ २७ ॥
लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः

दोनों पद मिलके एक नाम भया ॥ विष्वक्सेनः ॥
जिसकी थोडीही क्रियासे दैत्योंकीसेना विष्वक् नाम
चारों तरफ भागजाय ॥ जनार्दनः ॥ दुष्टजनोंको जो
मारै १ अथवा नरकादिमें डालै२॥भक्तलोग जिससे
मागें ३ ॥ वेदः ॥ जो अपने मार्गको जतावै ॥
वेदवित् ॥ वेदके अर्थको यथार्थ जाननेवाले१ वेदके
अर्थको धारण करनेवाले २ ॥ अव्यंगः ॥ व्यक्ति
रहित ॥ वेदांगः ॥ जिसके अंगसे वेद उत्पन्नभये हैं
१ वेदरूप२॥ १३० नाम ॥ वेदवित् ॥ वेदकोविचा-
रनेवाले१ ॥ कविः ॥ जो पदार्थ इंद्रियोंसे न देखा
जाय उसके देखनेवाले ॥ २७ ॥ लोकाध्यक्षः ॥
सब लोकके प्रधाननाम द्रष्टा१ सब लोकके योगक्षेम
करनेवाले ॥ २ ॥ सुराध्यक्षः ॥ देवतोंके स्वामी १
उनके शत्रुओंके हंता और मनोरथोंके देनेवाले २॥

कृताकृतः॥चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्र-श्चतुर्भुजः॥२८॥भ्राजिष्णुर्भोजनंभोक्ता

धर्माध्यक्षः ॥ धर्म और अधर्मको साक्षात् देखनेवाले और उसका फल देनेवाले॥ कृताकृतः ॥ कृतकार्यरूप अकृत कारणरूप ॥ चतुरात्मा ॥ स्वर्गादिकमें पृथक् चार चार मूर्ति जिसकी हैं जैसे, सृष्टिकालमें ब्रह्मा १दक्षादिप्रजापति२काल३सबजीव४और पालन कालमें विष्णु१मन्वादिक२काल३सबभूत४संहारका-लमें रुद्र १ मृत्यु२काल३सबभूत४ यह तीनों कालमें भगवानकी विभूति है, विष्णुपुराणमें लिखाहै ॥ चतुर्व्यूहः॥चारहैं व्यूह नाम विभाग जिसके वासुदेव १ संकर्षण २ प्रद्युम्न ३ अनिरुद्ध ४ चार रूपहैं जिसके चतुर्दंष्ट्रः ॥ चार डाढवाले श्रीनृसिंह १ चारडाढवाले वराह भगवान् २ ॥ चतुर्भुजः ॥ चारभुजावाले ॥ १४० नाम ॥ २८ ॥ भ्राजिष्णुः ॥ सदा प्रकाशरूप॥ भोजनं ॥ भोज्यरूप जो माया है सो है भोजन ॥ भोक्ता ॥ पुरुष होकर मायाके भोगनेवाले ॥

सहिष्णुर्जगदादिजः॥अनघोविजयो
जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः ॥ २९ ॥
उपेंद्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचि-

सहिष्णुः ॥ दैत्योंको हरावनेवाले ॥ जगदादिजः ॥ हिरण्यगर्भरूप होके जगत्के आदिमें प्रगट होनेवाले ॥ अनघः ॥ पापदुःखव्यसनसे रहित ॥ विजयः ॥ ज्ञानवैराग्य ऐश्वर्यादिगुणोंसे जगत्को जीतनेवाले ॥ जेता ॥ स्वभावकरके सब भूतोंको अच्छीतरह जीतनेवाले ॥ विश्वयोनिः ॥ विश्व है योनि जिसकी ॥ १ ॥ विश्वरूपसे कार्यरूप और योनिरूपसे कारणरूप है ॥ २ ॥ पुनर्वसुः ॥ वारंवार जीवरूप होके शरीरमें वसनेवाले॥ १६०नाम ॥२९॥ उपेंद्रः ॥ इंद्रके समीप छोटे भाई बनके रहनेवाले १ उपरि नाम गोलोकके इंद्र २ ॥ वामनः ॥ वामन अवतार १ जिसका भजन देवता करें २ ॥ प्रांशुः ॥ बहुत लंबे चौंडे बलिके दान समयमें जो रूपधारा था अमोघः ॥ जिसका व्यापार व्यर्थ नहीं ॥ शुचिः

रूर्जितः ॥ अतींद्रः संग्रहः सर्गो धृ-
तात्मा नियमो यमः ॥ ३० ॥ वेद्यो
वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः॥

॥ स्मरणपूजास्तुतिकरनेवालोंको जो पवित्रकरैं ॥
॥ ऊर्जितः॥परमबलवान् ॥ ॥ अतींद्रः॥स्वाभाविक
ज्ञान वैराग्य ऐश्वर्यादिकसे इंद्रको जीतनेवाले ॥
संग्रहः॥ संहारकालमें सबको बटोरलेनेवाले॥ सर्गः॥
सृष्टिरूप १ सृष्टिके कारणरूप २ ॥ धृतात्मा ॥
एकरूपसे स्थिरहै आत्मा नाम स्वरूप जिसका
१६०नाम नियमः॥अपने अपने अधिकारमें प्रजाको
लगानेवाले ॥ यमः सबके हृदयमें बैठके सबको
अपनेअपने कामोंमें लगावनेवाले३०॥वेद्यः॥मोक्षा-
र्थियोंके जाननेयोग्य ॥वैद्यः॥ वेदादि सबविद्याओंसे
जानने योग्य ॥सदा योगी॥ सदा आत्मज्ञानकायोग
है जिसको ॥ वीरहा ॥ धर्मसेतुके नाशक जो असुर
वीर हैं उनके हंता ॥ माधवः॥ ॥ मा नाम ब्रह्मविद्या
उसके पति ॥ हरिवंशका प्रमाण ॥ मा विद्या च हरेः

अतींद्रियो महामायो महोत्साहो महा-
बलः ॥ ३१ ॥ महाबुद्धिर्महावीर्यो महा-
शक्तिर्महाद्युतिः॥अनिर्देश्यवपुः श्रीमा-

प्रोक्ता तस्या ईशो यतो भवान्॥तस्मान्माधवनामासि
धवः स्वामीति शब्दितः ॥ १ ॥ मधुः ॥ मधुनाम
अमृत उसकी तरह अत्यंत आनंद देनेवाले ॥
अतींद्रियः॥इन्द्रियोंकी जहां पहुँच नहीं ॥ महामायः
सब मायावियोंसे बडे मायावी १७०नाम॥महोत्साह
जगत्के उत्पत्ति स्थिति प्रलय करनेमें बडा उत्साह
जिसको ॥ महाबलः ॥ सब बलवानोंसे बली ॥
॥ ३१ ॥ महाबुद्धिः॥सब बुद्धिमानोंसे बडे बुद्धिमान्
महावीर्यः ॥ जिसका अविद्यारूप बडा पराक्रम जो
गतिका कारणहै ॥ महाशक्तिः॥ बडीसामर्थ्यवाले ॥
महाद्युतिः ॥ भीतर बाहर महाप्रकाशरूप ॥ अनिर्दे-
श्यवपुः ॥ जिसका शरीर ऐसा कहनेके योग्य नहीं
है कि यही है ॥ श्रीमान् ॥ ऐश्वर्यरूपलक्ष्मीवान

नमेयात्मा महाद्रिधृक् ॥ ३२ ॥

ले॥अमेयात्मा ॥ जिनकी आत्मा नाम बुद्धि प्रमाणसे बाहरहै ॥ महाद्रिधृक् ॥ बड़े पर्वतके उठावनेवाले समुद्रमथनमें कच्छपरूपसे मंदराचलको वा ब्रजरक्षामें कृष्णरूपसे गोवर्द्धनको धारण करनेवाले १८० नाम ॥ ३२ ॥

महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतांगतिः ॥ अनिरुद्धः सुरानंदो गोविंदो गोविदांपतिः ॥ ३३ ॥

महेष्वासः ॥ बड़ाहै धनुष जिसका ॥ महीभर्ता ॥ वराहरूपसे पृथ्वीको धारण करनेवाले ॥ श्रीनिवासः ॥ जिसकी छातीमें स्वर्णरेखारूप लक्ष्मी वसै॥ ॥ सतांगतिः ॥ सत् नाम वैदिकसाधुवोंके गति नाम मोक्षदाता ॥ अनिरुद्धः ॥ जिसको कोई शत्रु रोक न सकै ॥ सुरानंदः ॥ देवतोंको आनन्द देनेवाले ॥ ॥गोविंदः॥ वराहरूपसे पृथ्वीके धारण करनेवाले१ गायोंके इंद्र२ गो नाम वेदरूपवाणीसे पावनेवाले३॥

गोविदांपतिः ॥ वेदवाणी जाननेवालोंके पति॥३३॥

मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः॥हि- रण्यनाभःसुतपाः पद्मनाभःप्रजापतिः॥३४॥

मरीचिः ॥ तेजस्वियोंमें बड़े तेजस्वी॥दमनः ॥ यमा- दिकरूपसेजो प्रजा अधिकारपायकेप्रमत्त होय उनको दंड देनेवाले१९०नाम॥हंसः॥मैं वही हूं ऐसी भावना करनेवालोंको संसारबंधनसे छोडावनेवाले १ सब शरीरोंमें बिंबरूप और प्रतिबिंबरूपसे रहनेवाले २ ॥ सुपर्णः॥सबके हृदयमें जो भलीभाँति गमन करै १, सुन्दर पंखवाले गरुड़जी २॥ भुजगोत्तमः॥शेषवासु- किरूपसे भुजग नाम टेढ़ेचलनेवालोंमें उत्तम॥हिर- ण्यनाभः ॥ सुवर्णकी तरह सुन्दर है नाभि जिसकी १ ॥ हि नाम हितकारक रण्य नाम रतिकारकहै नाभि जिसकी ध्यानकरनेवालोंको २ ॥ सुतपाः ॥ बदरिकाश्रममें नरनारायणरूपसे उत्तम ज्ञानरूप तप करनेवाले१॥मन और इन्द्रियोंका एकाग्र होना परम तपहै यह स्मृतिमें लिखाहै ॥ पद्मनाभः ॥ कमलकी

अमृत्युः सर्वदृक् सिंहः संधाता संधि-
मान् स्थिरः ॥ अजो दुर्मर्षणः शा-
स्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा ॥ ३५ ॥

तरह सुन्दर गोल है नाभि जिसकी १,हृदयमेंकमल
प्रकाशमान२॥ प्रजापतिः ॥ प्रजाओंके पति ॥३४॥
अअमृत्युः॥मृत्युनाम विनाश उसका कारण तिससे
रहित ॥ सर्वदृक् ॥ सबजगत्के शुभाशुभ कर्म देख
नेवाले अपने स्वाभाविक ज्ञानशक्तिसे ॥ सिंहः ॥
दैत्यरूपमृगोंके हंता ॥ २०० नाम ॥ संधाता ॥
जीवोंके कर्मके पूरे फल देनेवाले ॥ संधिमान् ॥
जीवरूपहोके संधि नाम कर्मोंके फल भोगनेवाले
॥स्थिरः॥ सदा एकरूप ॥ अजः ॥भक्तोंके हृदयमें
रहनेवाले१,दैत्योंपर बाण चलावनेवाले२॥दुर्मर्षणः॥
जिसके प्रतापको दानवादि सह न सके ॥ शास्ता ॥
श्रुति स्मृति शास्त्रोंकरके सबके शिक्षा देनेवाले ॥
॥ विश्रुतात्मा ॥ बहुतप्रसिद्ध सत्यज्ञानादिकरूप
आत्मा ॥ सुरारिहा ॥ देवतोंके शत्रुनाशक ॥ ३५ ॥

गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः ॥ निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः ॥ ३६ ॥

गुरुः ॥ सब विद्याके उपदेश करनेवाले १, सबके पिता २॥ गुरुतमः ॥ ब्रह्मादिकोंको ब्रह्मविद्या सिखावनेवाले ॥ २१० नाम ॥ धाम ॥ ज्योतिरूप १, सब कामनाके रहनेकी जगह २ ॥सत्यः॥ सत्यवचनरूप १जगत् जो दिखाई देताहै उसमें परमसत्यरूप आपहैं सत्यपराक्रमः॥सत्यहै पराक्रम जिसका ॥ पर नाम शत्रु उसको जो दबावै सो पराक्रम कहावै ॥ निमिषः॥ योगनिद्रासे आँख मूँदनेवाले॥अनिमिषः ॥ नित्यप्रबुद्धस्वरूप १ मत्स्यअवतारमें पलकरहित २ ॥ स्रग्वी ॥ पञ्चतन्मात्रारूपी वैजयंतीमालावाले ॥ वाचस्पतिः ॥ उदारधीः ॥ वाणीके पति उदार नाम सब पदार्थके ज्ञाता है बुद्धि जिसकी ॥ यह दोनों पदसे एक नामहै ॥ ३६ ॥

अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान्न्यायो नेता

समीरणः ॥ सहस्रमूर्द्धा विश्वात्मा
सहस्राक्षः सहस्रपात् ॥ ३७ ॥

अग्रणीः ॥ मुमुक्षु लोगोंको अग्र नाम उत्तम पद देनेवाले ॥ ग्रामणीः ॥ चतुर्विधभूतग्रामके नायक ॥ चार प्रकारके भूत हैं अंडज अंडेसे जो उत्पन्न होय पक्षी सर्पादिक १ पिंडज मनुष्य पश्वादिक२ स्वेदज जुआं मच्छर कीडे ३ उद्भिज्ज वृक्षलतादिक ४ ॥ श्रीमान्॥सबसे अधिक शोभावाले॥२२०नाम॥न्यायः॥ तर्कशास्त्रसे प्रमाणपूर्वक जिसका ज्ञान होय ॥ नेता ॥ जगत्केनिबाहनेवाले ॥ समीरणः ॥ प्राणवायुरूपसे सब जीवोंके प्रेरक॥सहस्रमूर्धा॥अनन्त हैं शिर जिसके ॥ विश्वात्मा ॥ सब जगत्के आत्मा अन्तर्यामीरूप॥ सहस्राक्षः ॥ अनन्तनेत्रवाले १ अनन्तइन्द्रियवाले ॥ सहस्रपात् ॥ अनन्तपैरवाले ॥ ३७ ॥

आवर्त्तनो निवृत्तात्मा संवृतः संप्रमर्दनः ॥ अहःसंवर्त्तको वह्निरनिलो धरणीधरः॥ ३८ ॥

आवर्तनः संसारचक्रके घुमावनेवाले॥ निवृत्तात्मा ॥ जिसका आत्मा नाम स्वरूप संसारबंधनसे निवृत्त है॥ संवृतः॥ मायासे ढके हुए २३० नाम॥ संप्रतर्दनः ॥ रुद्रकालादिक रूपसे जगत्के संहार करावने वाले॥ अहः॥ संवर्तकः ॥ दिनके करनेवाले सूर्य॥ वह्निः ॥ अग्निरूप होके देवतोंको आहुति पहुंचावने वाले॥ अनिलः ॥ जो नाश न होय १ वायुरूप २ जैसे वायु-सुगन्ध दुर्गंधको ग्रहण करके आप शुद्ध रहताहै वैसे पुण्यपापसे पृथक् रहनेवाले ॥ धरणीधरः॥ शेषरूपसे अथवा वराहरूपसे पृथ्वीके धारण करनेवाले ॥३८॥

सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्व-
भुग्विभुः ॥ सत्कर्त्ता सत्कृतः साधु-
र्जह्नुर्नारायणो नरः ॥ ३९ ॥

सुप्रसादः ॥ सुन्दरहै प्रसाद नाम रीझ जिस्की जैसे शिशुपालादि शत्रुओंको भी मुक्ति दयी ॥ ॥ प्रसन्नात्मा ॥ रजोगुण तमोगुणसे रहित है आत्मा नाम अन्तःकरण जिसका १ दयालुस्वभाव

ववाले२पूर्णकाम होनेसे प्रसन्नहै आत्मा जिसकी ॥३॥ विश्वधृक्॥ज्ञान वैराग्य ऐश्वर्यादिकसे जगत्को तुच्छ जाननेवाले॥विश्वभुक्॥प्रलयकालमें महाकालरूपसे जगत्को भोजनकरनेवाले १ ।विष्णुरूपसे जगत्के पालक २ ॥ विभुः ॥ अनेक रूप होनेवाले २४० नाम ॥ सत्कर्ता ॥ सत्कार करनेवाले ॥ सत्कृतः ॥ पूजितोंके पूजित ॥ साधुः ॥ लोक वेदके अनुकूल आचरण करनेवाले १ सब चाहतीवस्तुके सिद्ध करनेवाले२ ॥ जह्नुः ॥ संहारकालमें जनोंके हंता १ विमुखजनोंको त्यागनेवाले २ भक्तोंको परमपदके दाता ३॥ नारायणः नर नाम आत्मा तिससे उत्पन्न भये पंचभूतादिको नार कहतेहैं अयन नाम घर पंच-भूतमें कारणरूपहोके जो रहै उसको नारायण कहै १ महाभारतका प्रमाण "नराज्जातानि तत्त्वानि नारा-राणीति विदुर्बुधाः ॥ तान्येव चायनं तस्य तेन नारा-यणः स्मृतः ॥ १ ॥" प्रलयकालमें नर नाम जीवोंके अयन नाम निवासस्थान २ नारनाम जलमें अयन नाम घर है जिसके अर्थात् हिरण्यगर्भरूप ३ जीव समूह नार तिसमें बसेसो नारायण ४ जीवसमूहका

अयन नाम ज्ञानहैं जिसको सर्वज्ञरूप॥नरः॥ जीवों-
को कर्ममें लगावनेवाले १ कर्मका फल देनेवाले२॥३९

असंख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शि-
ष्टकृच्छुचिः ॥ सिद्धार्थः सिद्धसंक-
ल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः ॥ ४० ॥

असंख्येयः ॥ जिसके नाम रूप कर्म गिनतीमें न
आवें ॥ अप्रमेयात्मा ॥ जिसके स्वरूपका यथार्थ
ज्ञान न होसकै॥विशिष्टः ॥ सबसे उत्तम बड़ेशिष्ट ॥
शिष्टकृत ॥ शिक्षाकरनेवाले १ शिष्टजनोंके पालक२
२५० नाम ॥ शुचिः ॥ मायासे रहित ॥ सिद्धार्थः॥
सिद्धहै मनोरथ जिसका ॥ सिद्धसंकल्पः ॥ सत्य है
संकल्प जिसका ॥ सिद्धिदः ॥ कर्मके फल यथा
योग्य देनेवाले ॥ सिद्धिसाधनः ॥ भक्तोंको
अणिमादिक सिद्धि और मुक्तिके दाता ॥ ४० ॥

वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः॥वर्ध-
नो वर्द्धमानश्च,विविक्तः श्रुतिसागरः॥४१॥

वृषाही॥वृष नाम धर्मद्वादशाहादिकयज्ञके अहनाम प्रकाश अर्थात् आपही उसके कर्ता हैं और भोक्ताभी हैं॥वृषभः॥भक्तोंकी कामनाके वरसनेवाले॥विष्णुः॥ लोकके आक्रमण करनेवाले ॥ वृषपर्वा ॥ जिसकी प्राप्ति ही धर्मसे होय, ॥ वृषोदरः ॥ ब्रह्मादि सब प्रजा जिसके उदरसे उत्पन्न होंय २६० नाम ॥ वर्द्धनः॥भक्तोंकी पूजाके फलको बढ़ावनेवाले जैसे सुदामाके तंडुलका फल बढाया ॥ वर्द्धमानः॥ जगत्रूप होके बढनेवाले ॥विविक्तः ॥ वर्द्धमान होकरभी जगत्से न्यारे ॥ श्रुतिसागरः ॥ वेदके समुद्र १ जिसमें वेदशास्त्ररूपी समुद्र वासकरे ॥ ४१ ॥

सुभुजो दुर्धरो वाग्ग्मी महेंद्रो वसुदो वसुः ॥ नैकरूपो बृहद्रूपःशिपिविष्टः प्रकाशनः ॥ ४२ ॥

सुभुजः॥जिसकी भुजा जगत्की रक्षाकरनेवाली बहुत सुंदरहैं ॥ दुर्धरः॥ जिसको कोई धारण न कर सके१योगीलोग जिसकोध्यानमेंबहुत दुःखसे धारण

नाम ठहरायसकैं ॥ वाग्मी॥ उत्तम वेदरूप वाणीके धारण करनेवाले ॥ महेंद्रः ॥ ईश्वरोंके ईश्वर ॥ वसुदः ॥ धनके देनेवाले ॥ वसुः ॥ धन स्वरूप १ माया करके अपने रूपको छिपावने वाले ॥ अधरमें वास करनेवाले २७० नाम ॥नैकरूपः ॥ जिसका एकरूप नहीं ॥ वृहद्रूपः ॥ बहुत बड़ारूप वराहादिक ॥ शिपिविष्टः॥शिपि नाम पशु,विष्टः नाम प्रवेश करने वाले यज्ञ पशुरूप १ शि नाम जल पि नाम पान करनेवाले अर्थात् जलकी शोषनेवाली किरनवाले सूर्यरूप २ अंतर्यामी ॥ प्रकाशनः ॥ सबके प्रकाशक ॥ ४२ ॥

ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः ॥ ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मंत्रश्चं-द्रांशुर्भास्करद्युतिः ॥ ४३ ॥

ओजस्तेजोद्युतिधरः॥ओज नाम बल तेज नाम शूरतादिगुण द्युति नाम प्रकाश बलशौर्यादिगुण और प्रकाशके धारणकरनेवाले१बलरूप तेजरूपद्युति नाम

ज्ञानके धारणकरनेवाले२पहिले अर्थमें तीनों विशेषण का एक नामहै दूसरे अर्थमें तीन नाम हैं॥प्रकाशात्मा॥ प्रकाश रूपहै मूर्ति जिसकी ॥ प्रतापनः ॥ सूर्यरूपसे जगत्के प्रकाशक १ सूर्यसंकर्षणादिरूपसे जगत्को भस्म करने वाले २ ॥ ऋद्धः ॥ धर्म ज्ञान वैराग्य ऐश्वर्यादिकसे पूर्ण ॥ स्पष्टाक्षरः ॥ स्पष्ट है अक्षर जिसका अर्थात् प्रणवरूप ॥मंत्रः॥ तीनों वेदके मंत्र रूपी मंत्रसे जिसका ज्ञान होय२८० नाम॥चंद्रांशुः॥ संसारके तापको चांदकी किरणवत् हरनेवाले ॥ भास्करद्युतिः सूर्यकी तरह जगत्के प्रकाशक ॥४३॥

अमृतांशूद्भवो भानुः शशबिंदुः सुरे-
श्वरः ॥ औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्म-
पराक्रमः ॥ ४४ ॥

अमृतांशूद्भवः ॥ ॥ समुद्रमथनकरके चंद्रमाको निकासनेवाले ॥ भानुः ॥ सदाप्रकाशमान ॥ शश-बिंदुः ॥ शश नाम मृग बिंदु नाम चिह्नहैजिसके सो चंद्रमाकी तरह प्रजाको पोषण करनेवाले ॥ सुरेश्वरः॥

सु नाम सुंदरफल र नाम दाता ऐसे जो देवता उनके ईश्वर॥औषधम्॥ संसाररूप रोगके औषध॥ जगतःसेतुः ॥ जगत्के पार उतारनेके वास्ते सेतु १ जगत्के वर्णाश्रमधर्मके सेतु नाम मर्यादापालक२॥ सत्यधर्मपराक्रमः ॥ जिसके धर्मनाम ज्ञान वैराग्यादिक और पराक्रम सामर्थ्य सत्यहै ॥ ४४ ॥

भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोनलः॥
कामहा कामकृत्कांतः कामः कामप्रदः प्रभुः ॥ ४५ ॥

भूतभव्यभवन्नाथः॥ भूत भविष्य वर्तमान तीनोंकालके प्राणियोंके स्वामी १उनप्रणियों करके जो प्रार्थितहोय २प्रलयकालमेंप्राणियोंके नाथ नामनाशकरनेवाले३ प्रजाके सृष्टिकालमें आशिषदेनेवाले ४ स्थितिकालमें प्रजाको सत्कर्ममें लगानेवाले५॥२९०नाम॥पवनः॥ पवित्रकरनेवाले वायुरूप॥पावनः।पवित्र करावनेवाले जिसके भयसे वायु चलताहै ॥ अनलः ॥ अन नाम प्राण ल नामग्रहणकरनेवाला जीवरूप१नलनामगध

उस करके रहित२ जिसका प्राण नहीं क्योंकि अनंत है ॥ कामहा ॥ मुमुक्षुभक्तोंके विषयकामनाके हंता ॥ हिंसकोंके साधु पीडादि कामनाके नाशक ॥ कामकृत् ॥ सात्त्विक भक्तोंकी कामना पूरी करनेवाले १ काम नाम प्रद्युम्नके जनक २ ॥ कांतः ॥ मनोहररूप १ क नाम ब्रह्माको दूसरे परार्द्धके अंतमें नाशकरनेवाले ॥ कामः ॥ मुमुक्षु लोग जिसकी कामना करें ॥ कामप्रदः ॥ भक्तोंकी कामनाको अधिक देनेवाले ॥ प्रभुः ॥ बहुत होनेवाले ॥ ४९ ॥

युगादिकृद्युगावर्तो नैकमायो महाशनः ॥ अदृश्यो व्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनंतजित् ॥ ४६ ॥

युगादिकृत् ॥ युगसंवत्सरमासादिकेकर्ता १युगोंके प्रारंभकरनेवाले ॥३००नाम॥युगावर्तः॥ सत्ययुगादिको वारंवारघुमावनेवाले॥नैकमायः ॥ अनेकप्रकारकी माया रचनेवाले ॥ महाशनः ॥ प्रलय कालमें सब जगत्के खानेवाले ॥ अदृश्यः ॥ सबकी बुद्धि

और इंद्रियोंसे न लखे जाते ॥ व्यक्तरूपः ॥ प्रगट है स्थूलरूप जिसका १ योगियोंके हृदयमें स्वयं प्रकाशरूपसे प्रगट होनेवाले २ ॥ सहस्रजित् ॥ हजारों असुरोंके जीतनेवाले ॥ अनंतजित् ॥ अनंतजीवोंको युद्धादि सब लीलामें जीतनेवाले ॥ ४६ ॥

इष्टोऽविशिष्टःशिष्टेष्टः शिखंडी नहुषो वृषः ॥ क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः ॥ ४७ ॥

इष्टः ॥ परमानंदरूप होनेसे सबको प्रिय १ यज्ञादि करके पूजित २ ॥ अविशिष्टः॥ सबके हृदयमें समान रूपसे अंतर्यामीरूप होके रहनेवाले ॥ शिष्टेष्टः ॥ शिष्टनाम उत्तमजनोंके इष्ट १ शिष्टजनजिनको प्यारेहैं २ शिष्टजनों करके पूजित ३॥ ३१० नाम॥ शिखंडी॥ मोरमुकुटवाले ॥ नहुषः ॥ अपनी मायासे जीवोंको बांधनेवाले ॥ वृषः ॥ धर्मरूप होके कामनाके बरसावनेवाले ॥ क्रोधहा ॥ साधुजनोंके क्रोधहंता ॥ क्रोधकृत् ॥ दुष्टोंके क्रोधबढावनेवाले॥कर्ता॥जगत्के

कर्ता १ क्रोधकृत् नाम दुष्ट जनोंके कर्ता नाम मारनेवाले ॥ दोनों पदसे एक नाम ॥ विश्वबाहुः ॥ जिसकी बाहु सबका आधारहैं १ सब तर्फ जिसकी भुजाहैं २ ॥ महीधरः ॥ पृथ्वीके धारण करनेवाले १ पूजाके धारण करने वाले २ ॥ ४७ ॥

अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वास-
वानुजः॥अपांनिधिरधिष्ठानमप्रमत्तः
प्रतिष्ठितः ॥ ४८ ॥

॥ अच्युतः ॥ षड्भावविकारसे रहित॥ छःविकार जन्म लेना१अस्ति नाम रहना२वर्धते नाम बढ़ना ३ विपरिणामते नाम रूपका बदलजाना ४ अपक्षीयते नाम घटना ५ नश्यते नाम नाशहोना ६ ॥ प्रथितः॥ पालनादिकमें प्रसिद्ध ॥ प्राणः ॥ प्रजाको प्राणरूपसे जिलावनेवाले ३२० नाम ॥ प्राणदः ॥ सुरोंको बलदेनेवाले १ असुरोंके बलके नाशक ॥ वास-वानुजः ॥ इंद्रके छोटेभाई ॥ अपांनिधिः ॥ समुद्र-रूपसे जलके घर ॥ अधिष्ठानम् ॥ जिसमें सब भूत

वासकरैं कारणरूप ब्रह्म ॥ अप्रमत्तः ॥ कर्मके अनुकूल फल देनेमें सावधान ॥ प्रतिष्ठितः ॥ अपनी महिमामें स्थित ॥ ४८ ॥

स्कंदः स्कंदधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः ॥ वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरंदरः ॥ ४९ ॥

॥ स्कंदः ॥ अमृतरूपहोके बहनेवाले १ वायुरूप होके जगत्के शोषनेवाले २ ॥ स्कंदधरः ॥ धर्मपथके धारण करनेवाले ॥ धुर्यः ॥ सब जगत्का जन्म स्थितिलयरूपी बोझ उठावनेवाले ॥ वरदः॥ वांछित वर देनेवाले १ वर नाम गऊ उसे दान देनेवाले यजमानरूप होके २ ॥ ३३० नाम ॥ वायुवाहनः ॥ सातों वायुके चलावनेवाले नाम ७ वायुके—आवह १ प्रवह २ अनुवह ३ संवह ४ विवह ५ परावह ६ परिवह ७ सातों वायुके स्थान यहहैं मेघ और पृथ्वीके बीचमें आवह १ मेघ और सूर्यके बीचमें प्रवह २ सूर्य चांदके बीचमें अनुवह ३ चांद और नक्षत्रोंके बीचमें संवह ४ नक्षत्र

और ग्रहोंके बीचमें विवह ५ ग्रह और सप्तऋषिके बीचमें परावह ६ सप्तऋषि और ध्रुवके बीचमें परिवह ७ ॥ वासुदेवः ॥ जो सबमें वसै वा सबको ढकलेवै देव नाम क्रीड़ा करै अथवा विवाह करै वा प्रकाशकरै वा जिसकी सब स्तुतिकरै वा मुमुक्षु लोग जहां प्राप्त हों सो देव ॥ प्रमाण महाभारतका– "वासनात्सर्वभूतानां स्तुत्यो यो देवयोनिषु ॥ वासुदेवस्ततो ज्ञेयो योगिभिस्तत्त्वदर्शिभिः" ॥१॥ बृहद्भानुः ॥ बडी है भानु नाम किरण जिसकी १ चंद्रसूर्यमें प्रकाशकरनेवाली और जगत्को प्रकाश करनेवाली २ ॥ आदिदेवः ॥ आदि नाम कारण रूप देव ॥ पुरंदरः ॥ देवतोंके शत्रुओंके पुर नाम गाँवके विदारण करनेवाले ॥ ४९ ॥

अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः ॥ अनुकूलः शतावर्त्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः ॥ ५० ॥

॥अशोकः॥शोकादिषडूर्मीसे रहित ॥ "क्षुत्पिपासे

जरामृत्यू शोकमोहौ षडूर्मयः" ॥ तारणः ॥ संसा-
रार्णवसे तारनेवाले ॥ तारः ॥ गर्भ जन्म जरा मृत्युके
भयसे तारनेवाले ॥ शूरः ॥ बडे पराक्रमवाले शौरिः॥
शूरसेनके कुलमें उत्पन्न ॥ ३४० नाम ॥ जनेश्वरः ॥
जन नाम जंतुके ईश्वर ॥ अनुकूलः ॥ आत्मारूपसे
सबको अनुकूल १ जिसका कोई प्रतिकूल नहीं २ ॥
॥शतावर्त्तः॥धर्मकी रक्षाके वास्ते सब पदार्थोंमें वर्त्त-
मान १ प्राणरूपसे सैकडों नाडियोंमें वर्त्तमान ॥
॥ पद्मी ॥ पद्महै जिसके हाथमें ॥ पद्मनिभेक्षणः ॥
कमलकी रोशनी जिसकी आँखोंमें ॥ ५० ॥

पद्मनाभोऽरविंदाक्षः पद्मगर्भः शरीर-
भृत॥महर्द्धिर्ऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो
गरुडध्वजः ॥ ५१ ॥

॥ पद्मनाभः॥ब्रह्मा जिसमें पैदा हुआ ऐसा कमल
है जिसकी नाभिमें१कमलके भीतर जो गुच्छाहै उस-
के बीचकी किरणोंमें वसे सो पद्मनाभ॥अरविन्दाक्षः॥
कमलकीसी आँखोंवाले ॥ पद्मगर्भः ॥ योगियोंका

दिल जो कमलकी सूरतहै उसको गर्भ नाम बीचमेंरहै ॥ शरीरभृत् ॥ विनारूप होके वा प्राणरूपहोके सब शरीरोंको धारै १ वा अपनी मायासे सब शरीरोंको धारै २ ॥महर्द्धिः॥ बडीविभूतिवाला ३५० नाम ॥ऋद्धः॥ प्रपंचरूप होके बढै जो ॥ वृद्धात्मा ॥ पुराना है आत्मा जिसका॥महाक्षः॥ बडीआँखोंवाला॥गरुड-ध्वजः॥जिसकी ध्वजामें गरुडजीकी मूर्ति है ॥५१॥

अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हवि-र्हरिः ॥ सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान् समितिंजयः ॥ ५२ ॥

॥ अतुलः ॥ जिसके समान कोई नहीं १ गीतामें कहा है कि, तुम्हारे समान कोई नहीं ॥ भारी है यश जिसका२ यहश्रुतिहै ॥ शरभः॥ शरनाम शरीर सब शरीरोंमें आत्मारूप होके भासै ॥ भीमः ॥ जिससे सब डरै १ वा भक्तोंको अभयदेनेसे अभीमः२ समयज्ञः॥सृष्टि स्थिति प्रलयकोसब जानै १सब भूतोंमें समदृष्टि होना यही पूजाहै जिसकी २ जिसकाआरा-

धन समभावहै ॥ ३ ॥ हविर्हरिः ॥ यज्ञोंमें आहुति ग्रहणकरनेवाला १ हविष्यका ग्राहक २ गीतामेंकहाहै मैं सब यज्ञोंकाभोक्ता और प्रभु हूँ स्मरणसे पुरुषोंकी अविद्या दूर करनेवाला ३ श्याम अर्थात् हरितवर्ण॥ व्यासका वचन ॥"हराम्यघं च स्मर्तॄणां हविर्भागं क्रतुष्वहम्॥वर्णश्च मे हरिश्रेष्ठस्तस्माद्धरिरहं स्मृतः४॥" सर्वलक्षणलक्षण्यः ॥ सबतरहकेप्रमाणोंसे जो जाना-जाय १ साधु सर्वलक्ष लक्षण्य होते हैं परमार्थरूप होनेसे २ ॥३६०नाम ॥ लक्ष्मीवान् ॥ जिसके हृद-यमें नित्य लक्ष्मी वसै ॥ समितिंजयः ॥ समिति नाम लडाईको जीतने वाला १ जिसकी जय शुद्ध है २ ॥ ६२ ॥

विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः ॥ महीधरो महाभागो वेगवान-मिताशनः ॥ ६३ ॥

॥ विक्षरः ॥ दूर हुआहै नाश जिसका ॥ रोहितः रोहित नाम रोहू मछलीका रूप १ वराह रूप २

मार्गः ॥ परमानंदका रस्ता १ मुक्तिका मार्ग २ ॥ हेतुः ॥ जगत्का हेतु उपादानकारण निमित्त कारण होनेसे ॥ दामोदरः ॥ दमादिक साधनोंसे प्राप्त होनेवाला १ यशोदाजीने जिसके पेटमें रस्सीलगाकर बाँधा २ ॥ सहः ॥ सब जीवोंका तिरस्कार करै १ क्षमाकरै २सहनकरै ३॥ महीधरः॥ पर्वतरूप होकर पृथ्वीको धारै १ वराहरूप होकर पृथ्वीको उठावे २ ॥ महाभागः ॥ अपनी इच्छासे बडे शरीर १ अतिश्रेष्ठ शरीर २ भाग्यजन्य भोगोंको भोगनेवाला ३ अवतारोंमें बडे भोगोंका लेनेवाला४॥३७० नाम ॥ वेगवान् ॥ जलदी दौडनेवाला वेदूनचले मनसेभी अधिकहै वेग जिसका २ ॥ अमिताशनः ॥ प्रलय कालमें वेप्रमाण भोजनकरनेवाला ॥ ९३ ॥

उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमे-
श्वरः ॥ करणं कारणं कर्ता विकर्ता
गहनो गुहः ॥ ९४ ॥

उद्भवः ॥ संसारकी उत्पत्तिका उपादानकारण१

उद्धृतनामपृथक्हे भव नाम संसारसे २ ॥ क्षोभणः ॥ प्रकृति और पुरुषमें प्रवेशकरके क्षोभकरै ॥ विष्णुपुराणका वचनहै प्रकृति और पुरुषोंमें आत्मा प्रवेश करके क्षोभ करता है और आप सदाअविनाशीरहता है ॥ देवः ॥ सर्गादि नाम उत्पत्ति पालन संहारसे क्रीडा करै १ प्रकाश करै २ असुरोंको जीतै ३ सब भूतोंको धारै ४ आत्मा करके प्रकाशकरै ५ स्तुतिके योग्य ६ सब देश काल सबवस्तुमें व्याप्त ७ श्रुतिमें कहाहै किएकदेवहै सबभूतोंमें छिपा हुवा सर्वव्यापीहै सबका साक्षीहै ॥ श्रीगर्भः ॥ जगत्रूप श्रीहै जिसके गर्भमें ॥ परमेश्वरः ॥सबसे पर और प्रेरणाकरनेवाला ॥करणम् ॥ जगत्की उत्पत्तिका साधकतत॥ कारणम् ॥ निमित्तकारण उपादानकारण ॥ कर्ता ॥ स्वतंत्र३८०नाम॥विकर्ता॥विचित्र लोकोंका करनेवाला ॥ गहनः॥ जिसके स्वरूप और सामर्थ्य और चेष्टाको कोई भी न जानै॥गुह्यः॥ अपनी मायाकरके आपही छिप जाय ॥ ५४ ॥

व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो ध्रुवः ॥ परर्द्धिः परमः स्पष्ट-स्तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः ॥ ५९ ॥

॥ व्यावसायः ॥ सत्‌चित्‌मात्र ॥ व्यवस्थानः ॥ सबजगत्‌कास्थान १ सबलोकपालोंसे लेकर अधिकार पूर्वक अंडज पिंडज स्वेदज उद्भिज्ज चारों वर्णाश्रमके विभाग करनेवाले ॥ संस्थानः ॥ प्रलयकालमें जहां सब भूत स्थानकरैं १ प्रलयरूपी स्थानहै जिसका २ ॥स्थानदः॥ ध्रुव प्रह्लादादिभक्तोंको यथायोग्यस्थानके दाता ॥ ध्रुवः ॥ अविनाशी ॥ परर्द्धिः॥ सबसे श्रेष्ठ विभूति वाले ॥ परमः स्पष्टः ॥ परम नामशांति ज्ञानरूप स्वतंत्र होनेसे स्पष्ट१॥ सब सिद्धि जिसके अधीनहैं२ ॥३९० नाम॥तुष्टः॥परमानंदरूप॥पुष्टः॥ सदा सब जगह एकरूप ॥ शुभेक्षणः ॥ शुभ कारीहै दृष्टि जिसकी१ मुमुक्षुजनोंको मोक्ष कामेप्सुजनोंको काम पापी लोगोंको दंडदेनेवाला २ सर्व संदेहजन्य हृदयकी ग्रंथि और अविद्या जिसकी दृष्टिसे दूर होय जिसकी दृष्टिसे कर्मका नाश होय ४ श्रुति कहतीहै

कि, हृदयकी गांठ जिसकी दृष्टि खोलती है ॥५५॥

रामो विरामो विरजो मार्गो नेयो नयोऽनयः ॥ वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठोधर्मो धर्मविदुत्तमः ॥ ५६ ॥

॥रामः॥ जिसमें योगी लोग रमणकरैं १ योगियोंके हृदयमें रमणकरैं २ आत्मामें रमणकरैं ३ अपनी इच्छासे रमणीय सुंदर शरीर धारनेवाला४रघुकुलमें अवतार लेनेवाला ५ ॥ विरामः॥ जगत्का विश्राम नाम आधार व अवसानहै जिसमें १जगत् जिसमें अंत कालमें प्रवेश करै २ ॥ विरजः ॥ रजोगुणसे निवृत्त १जिसका वीर्य नाम पराक्रम आकाशसे भी परहै२ मार्गः॥जिसे जानके मुमुक्षु अमर होतेहैं उसी राहको मार्ग कहतेहैं श्रुतिमें कहाहै कि मुमुक्षुका यही ज्ञान मार्गहै १ ॥नेयः॥ प्राप्तहोनेवालेको नेय कहतेहैं पहुँचावनेवालेको नेता कहते हैं मार्ग कहतेहैं नेय कहतेहैं सुखसे उत्तम मार्ग नाम ब्रह्मज्ञानसेजीवोंको परमात्म

स्वरूपकी प्राप्तिकरै ॥ अनयः ॥ जिसका कोई प्रेरक नहीं ४०० नाम ॥ वीरः ॥ पराक्रमवाला ॥ शक्तिमतांश्रेष्ठः ॥ ब्रह्मादिक शक्तिमानोंसे श्रेष्ठ ॥ धर्मः॥जिसको सब भूत धारण करैं सो धर्म यह बडा सूक्ष्म धर्म है १ धर्मकरके जिसका आराधन होय२ धर्मविदुत्तमः ॥धर्मजाननेवालोंमें उत्तम श्रुति स्मृति जिसकी आज्ञा हैं धर्मके जाननेवाले अवतारादिकसे भी उत्तम ॥ ५६ ॥

वैकुंठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः
पृथुः ॥ हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो
वायुरधोक्षजः ॥ ५७ ॥

॥वैकुंठः॥नानाप्रकारकी गतिका दाता,विविध नाम नाना प्रकारकी वैकुंठ नाम गतिविकुंठानामनगरीके कर्ता पंचभूतका जगत्‌के आरंभमें इकट्ठाकरनेवाला ॥ पुरुषः॥ सबशरीरोंमें सोनेवाला१ सबपापोंकासादन नामनाशकरनेवाला२ ॥प्राणः॥ जीवरूपहोकर रक्षा करै १ प्राणरूप होकर चेष्टाकरावै संसाररूप होकर

चेष्टाकरावै विष्णुपुराणमें वचनहै॥प्राणदः॥ प्रलयमें प्राणोंको खंडनकरनेवाला १सृष्टिके आदिमें प्राणदेने-वाला२॥ प्रणवः ॥ पवित्रकरनेवाला इसी कारण श्रुति अकार उकार मकारकों प्रणव कहतीहै १जिसको नमस्कार करै यह सन्तकुमारका वचनहै २॥ पृथुः॥ प्रपंचरूप होकर विस्तार करै ॥४१०नाम ॥ हिरण्य-गर्भः ॥ सृष्टिका कारण१ हिरण्यरूप ब्रह्मांडका बीज गर्भमें है जिस्के ॥ शत्रुघ्नः ॥ देवतोंके शत्रुनको मारनेवाले १ ॥ व्याप्तः ॥ सबका कारण सबमें व्याप्त ॥ वायुः सबमें सुगंधरूप १ गीतामें वचनहै कि पृथ्वीमें सुगंध मैं हूं ॥ अधोक्षजः ॥ किसीसे नीचे छीन न हो १ स्वर्ग और पृथ्वी जिसके नीचे हैं ॥ ५७ ॥

ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परि-ग्रहः ॥ उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः ॥ ५८ ॥

ऋतुः ॥ कालात्मा ऋतुशब्द है ॥ सुदर्शनः ॥

सु नाम मोक्ष दर्शननाम ज्ञानहै जिसका १ शोभावान् कमलपत्रसे नेत्रवाले२अपनी इच्छासे सुंदररूपधारने वाले ३ भक्तोंको जिस्का दर्शन सुख देवै४॥कालः॥ काल होकर सबको खाय १ लोकके क्षयकरनेको मैं कालहूं गीतामें कहाहै॥ परमेष्ठी॥पर नाम उत्तम है महिमा जिसकी१हृदयरूपी आकाशमेंहै स्थिति जिसकी२॥४२०॥परिग्रहः॥जो शरण आवै उसको सब ओरसे ग्रहणकरै १ सर्वगत २ सर्वज्ञ३॥ उग्रः॥ सूर्यादिकको भयदाता१ जिसके भयसे पवन पवित्र करताहै और सूर्यतपताहै यहश्रुति कहतीहै॥संवत्सरः भूत जिसमें सुखसे वसैं ॥ दक्षः ॥ जगत्रूप होकर वर्द्धमानहोय१सर्वभूतको तत्क्षण उत्पन्नकरै २ ॥ विश्रामः॥ संसारसागरसे व्यासादिकको षडू-र्मि अविद्यासे और पंचक्लेश और मदमात्सर्यादि पंचउपक्लेशसे सब मुमुक्षुजनोंको छुटादेनेवाला ॥ विश्वदक्षिणः ॥ सब संसारसे सामर्थ १ विश्वके रचनेमें दक्ष नाम चतुर ॥ ९८ ॥

विस्तारः स्थावरस्थाणुः प्रमाणं बी-

जमव्ययम् ॥ अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः ॥ ५९ ॥

विस्तारः ॥ जिसमें जगत्का विस्तारहै॥स्थावर स्थाणुः ॥ स्वाभाविक स्थिति है जिसकी १ पृथ्वी आदि स्थितहैं जिस्में २ स्थावरस्थाणु एक नाम है ॥ प्रमाणम् ॥ ज्ञानात्मा द्वारा सबका प्रणाम रूप १ प्रत्यक्षादिक प्रमाणोंसे प्रमाणहै जिसका २ ॥ बीजम् ॥ अन्यथा भाव विना सबका कारण ॥ अव्ययम् ॥नाशरहित॥बीजमव्ययम् ॥ एक नामहै ॥ अर्थः ॥ सुखरूप जिसकी प्रार्थना करै १॥४३०नाम अनर्थः ॥ पुनरकाम जिसको कुछ अर्थ नाम कारज नहीं ॥ महाकोशः ॥ अन्नमयकोशादिक जिसके बड़ेबड़े भंडार हैं ॥ महाभोगः ॥ सुखरूप भोगहैं जिसके ॥ महाधनः ॥ भोगोंका साधनलक्षणरूप महाधनहै जिसके ॥ ५९ ॥

अनिर्विण्णःस्थविष्ठोभूर्धर्मयूपो महामखः नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमःक्षामःसमीहनः६०॥

अनिर्विण्णः ॥ सब काम प्राप्त होनेसे अशोच ॥ स्थविष्ठः ॥ विराटरूप होनेसे स्थित ॥ अग्नि जिसका शिरहै सूर्य चांद जिसकी आंखेंहैं १ पूर्णकामहोनेसे जिसको कुछ पीड़ा नहीं है२ ॥अभूः॥ जन्मादिकसे रहित १ सत्तारूप २ पृथ्वीरूप ३॥ धर्मयूपः ॥ यज्ञस्तंभरूप १ पशुकी तरह जो आराधनरूपी धर्ममें बँधा है ॥ महामखः ॥ यज्ञादि जिसके अर्पणकरनेसे निर्वाण मोक्षफल मिलै इसी कारणसे यज्ञका फल महान् होजाता है ॥ नक्षत्रनेमिः ॥ नेमि नाम चक्र सूर्यादि नवग्रह और तारोंको शिशुमारचक्रके हृदयमें वायुचक्रमें चक्ररूप होकर फिरावै ॥ ४४० ॥ नक्षत्री ॥ चन्द्ररूप नक्षत्रोंमें चांदरूप मैं हूं यह गीतामें कहाहै१॥क्षमः॥ सब कामोंमें समर्थ१ क्षमा जिसका स्वभाव है२ पृथ्वीकी तरह क्षमाहै जिसको ३ ॥ क्षामः ॥ सब विकारोंके नाश होजानेपर आत्मारूप होकर जो रहै १ ॥ समीहनः ॥ सृष्टि करनेमें भली प्रकार चेष्टा करने वाला ॥ ६० ॥

यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां-
गतिः ॥ सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो
ज्ञानमुत्तमम् ॥ ६१ ॥

॥ यज्ञः॥ सर्वयज्ञस्वरूप सब देवतोंके तृप्तिकारण यज्ञस्वरूप १ यज्ञ विष्णु है यहश्रुति कहती है ॥ ॥ इज्यः॥सबके इष्टदेव१फलके दाता इज्यनामपूज्य जो देवता और पितरोंका पवित्र यज्ञ करते हैं सो आत्माका पूजन करतेहैं यह हरिवंश पुराणमें कहाहै ॥ महेज्यः ॥ सब पूज्योंमें पूज्यतम मोक्षफल देनेसे ॥ क्रतुः ॥ स्तंभ सहित यज्ञका नाम क्रतुहै ॥सत्रम्॥ आसनादिक उपाय जिस यज्ञके लक्षणहैं१सत्पुरुषों-के रक्षक२॥सतां गतिः॥मुमुक्षुजनोंकीनानाप्रकारकी गति ४९०नाम ॥सर्वदर्शी॥सबका पाप पुण्य देखने वाला ॥ विमुक्तात्मा ॥ स्वभावहीसे मुक्तनाम छुटा है आत्मा जिसका ॥ सर्वज्ञः ॥ वही सर्व है वही ज्ञानयोग्य हैं यह जगत् जो दिखाई देताहै सोआत्मा है यह श्रुति कहती है ॥ ज्ञानमुत्तमम् ॥ एक

नाम है ज्ञानरूप श्रेष्ठ १ जन्मरहित अनवच्छिन्न नाम आदि अन्त रहित सर्वका साधक परमात्मा ब्रह्म सब है सत्य है आनंद है ज्ञानहै यह श्रुति कहती है ॥ ६१ ॥

सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत्॥मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहु- विदारणः ॥ ६२ ॥

॥ सुव्रतः ॥ उत्तम शोभितहै व्रत जिसका सब भूतोंको अभय देता हूँ यह मेरा व्रतहै यह रामायणमें रामजीका वचनहै व्रतनाम नियम ॥ सुमुखः ॥ सुंदरमुखवाले १ आनंदरूप मनोहर मुखकमलसे नेत्र विष्णुपुराणमें लिखा है २ वनयात्राके समय श्रीरामचंद्रका मुख परम सुहावना भया पिताका वचन राज्यसे भी प्यारा माना यह रामायणमेंलिखा है ३ ब्रह्मको सर्वविद्याके उपदेश करनेसे सुंदरमुख ४ जिसने ब्रह्माको उत्पन्न करके वेद दिया सब वेदोंको

प्रकाश किया यह श्रुतिने कहा है ॥ सूक्ष्मः ॥ इंद्रियोंका विषय नहीं ॥ शब्दादि जो विषयके कारण पंचभूत हैं उनसे रहित नाम जुदा २ बारीकसेबारीक ३ सर्वगत नाम सबमें व्यापक यह श्रुतिहै ॥ सुघोषः॥ सोहावना है शब्द जिसका श्रुतिरूप, मेघकी तरह गंभीर वचन १॥ सुखदः ॥भलेजनोंको सुखदाता १ दुर्जनोंके सुख दूर करनेवाला२॥सुहृत्॥विदून सेवा और बदला चाहनेके उपकार करनेवाला४६०नाम॥ मनोहरः॥परमानंदरूपसे मन हरनेवाला जो भूमा नाम व्यापकहै सोई सुखहै यह श्रुति कहती है॥जितक्रोधः ॥क्रोधका जीतनेवाला १ वेदमार्ग थापै २ विना क्रोध असुरोंको मारे ३॥ वीरबाहुः ॥ देवतोंके वैरियोंको मारे १ वेदकी मर्यादा स्थापन करै २ बडी पराक्रमी बाहुवाले ३ ॥ विदारणः ॥ अधर्मियोंको नाश करै ॥ ६२ ॥

स्वापनःस्ववशोऽव्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत् ॥ वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥ ६३ ॥

॥स्वापनः॥अज्ञानी जनोंको मायामें सुलावै नाम आत्मबोधसे रहितकरै १॥स्ववशः॥सृष्टिकी उत्पत्ति, स्थिति और लय जिसके वशमें है १ ॥ व्यापी ॥ आकाशकी तरह व्यापक सब कार्योंमें कारणरूप होकर १ ॥ नैकात्मा॥अनेकात्मा होकर जगत्रूप १ जगत्की उत्पत्ति स्थिति प्रलयके वास्ते अनेकरूपसे विराजमान २ ॥ नैककर्मकृत् ॥ जगत्की उत्पत्तिसे आदि लेकर अनेक कर्म करै १॥ वत्सरः॥सब जगत् जिसमें वसै १ ॥ वत्सलः ॥ जगत्पर दयालु, भक्त जिसको प्यारे हैं २ ॥ वत्सी ॥ वत्सोंका पालक नाम जगत्का पिता उसके सब बेटे हैं १॥रत्नगर्भः॥ रत्न है गर्भमें जिसके ऐसा समुद्र जिसके गर्भमें है १ ॥ धनेश्वरः ॥ धनोंका मालिक १ यक्षोंमें कुबेर मैं हूँ यह गीतामें कहाहै ॥ ६३ ॥

धर्मगुब्धर्मकृद्धर्मी सदसत्क्षरमक्षरम् ॥ अविज्ञाता सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः ॥ ६४ ॥

॥धर्मगुप्॥ धर्मोंके रक्षक धर्मकी रक्षाके हेतु युगयुगमें अवतार लेताहूँ यह गीताके ४ अध्यायमें कहाहै ॥ ॥ धर्मकृत् ॥ धर्मकरनेवाला वेदमर्यादाके स्थापनके वास्ते धर्मकरनेवाला धर्म अधर्मसे रहितभी है परन्तु धर्ममर्यादा स्थापन करे हैं ॥ धर्मी॥धर्मोंका धारणकरनेवाला॥सदसत्॥सत्तामात्र सत्‌रूप जगत्से सत्‌रूप पहिले यह सत्पदका अर्थ है असत् जगत्‌रूप होकर असत् नाम रूपविकार असत् है यह श्रुति है ॥ क्षरम् ॥ सब भूतरूप जगत् होकर क्षर नाम नाशवान् है ४८० नाम ॥ अक्षरम् ॥ कूटस्थ गीतामें लिखा कूटस्थ अचलरूप ध्रुव जगत् है ॥ अविज्ञाता ॥ आत्माको कर्ता माननेसे दुर्बल शक्ति होगई है जिसकी ऐसा जो है जीव उसको विज्ञाता कहते हैं उसका प्रतिद्वंद्व अविज्ञाता नाम सर्वज्ञ॥सहस्रांशुः ॥ जिसके किरण सूर्यादिक ज्योतिवालोंमें चमकरहीहै सूर्य उसीके तेजसे प्रकाश करता है यह श्रुति कहती है ॥ जो तेज सूर्य चंद्र अग्निमें है वह मेरा ही तेज है यह गीतामें कहाहै ॥ विधाता ॥ सब भूतोंका धारणेवाला १ शेष

दिग्गजादि जो जगत्के आधार हैं उनकाभी धार-नेवाला २ ॥ कृतलक्षणः ॥ सदा चैतन्यरूप १ शास्त्रादिकके कर्ता २ सजातीय विजातीयके विच्छेद लक्षणका कर्ता ३ श्रीवत्सरूप लक्ष्मी है लक्षण जिसका ॥ ६४ ॥

गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूत-महेश्वरः ॥ आदिदेवो महादेवो देवे-शो देवभृद्गुरुः ॥ ६५ ॥

॥गभस्तिनेमिः॥गभस्तिनाम सूर्यमंडलकी किरण उसमें सूर्यरूप होकर वसै १ ॥ सत्त्वस्थः ॥ प्रकाश सतोगुणमें प्रधान होकर वसै १ सत्त्वअंतःकरण सब जीवके अंतःकरणमें स्थित ॥ सिंहः ॥ सिंहकी तरह बलवान् नृ पदके लोप होनेसे नृसिंहका नाम सिंह है॥ ॥ भूतमहेश्वरः ॥ सबभूतोंका बड़ा ईश्वर १ भूतनाम जीव उनमें बडा २ ॥ आदिदेवः ॥ सब भूतोंका आ-दिकर्ता १॥४९०नाम ॥ महादेवः॥ महादेवजीके सि-वाय सब देवतोंको अपने आत्मज्ञानसे योगरूपी ऐश्व-

र्यमें लय करै १ सब भावोंको आत्मज्ञान योग ऐश्वर्य
जो पूज्य होय सो महादेव यह श्रुति कहतीहै।
॥ देवेशः ॥ सब देवतोंका ईश नाम मालिक १।
॥ देवभृद्गुरुः ॥ देवतोंके सरदार इंद्र उनके गुरु १ दे
तोंका और सब विद्याका पालक सब विद्याका धार
करनेवाला २ ॥ ६५ ॥

उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरा-
तनः ॥ शरीरभूतभृद्भोक्ता कपींद्रो
भूरिदक्षिणः ॥ ६६ ॥

॥उत्तरः॥ संसारसागरसे तारनेवाला १ सबसे श्रे
सबसे उत्तम इंद्र है यह श्रुति है ॥ गोपतिः ॥ गो
नाम अहीर बनकर गौओंको पालै १ गो ना
पृथ्वी उसका पति नाम पालक २ ॥ गोप्ता॥जगत
पालक ॥ ज्ञानगम्यः ॥ केवल ज्ञानसेही मिल
योग्य कर्महीसे नहीं ॥ पुरातनः ॥ जो सदा
पुराना १ सबसे पहिले जो होय २ ॥ शरीरभूतभृ
शरीरके कारण प्राणरूप होकर पञ्चभूतोंको धारण

नेवाले॥भोक्ता॥पालनेवाला १ अनन्तरूपसे जगत्का भोग करनेवाला २ ॥ ६०० नाम॥कपींद्रः ॥ कपि नाम वराह कपि नाम बन्दरोंके इन्द्र रामचन्द्ररूप ॥ ॥ भूरिदक्षिणः ॥ भूरि नाम बहुत यज्ञरूप धर्म और मर्यादारूपी यज्ञ बहुत दक्षिणावाले करैं ॥ ६६ ॥

सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित्पुरुस-
त्तमः ॥ विनयो जयः सत्यसंधो
दाशार्हः सात्वतांपतिः ॥ ६७ ॥

॥सोमपः॥सोमलताके पीनेवाले यज्ञमें देवतारूप १ धर्मकी मर्यादा देखाते हुए यजमानरूप होकर सोम-लता पीनेवाले२॥ अमृतपः ॥आत्मारूपीं अमृतका पीनेवाला १ समुद्रसे निकला हुआ अमृत असुरोंसे छीनके देवतोंको पिलावै और आप पियें२॥सोमः॥ चन्द्रमा होके औषधोंको पुष्ट करनेवाला १मैं चन्द्रमा-रूपहोके ओषधोंको पुष्ट करता हूँ यह गीतामें कहाहै उमा नाम पार्वतीके साथ रहनेवाला शिव २॥ पुरु-जित् ॥ पुरु नाम बहुतको जीतनेवाला॥पुरुसत्तमः॥

विश्वरूपको पुरु कहते हैं सत्तम नाम श्रेष्ठ १॥ विनयः॥ विनय नाम दंड दैत्य और दुष्ट प्रजाको जो दंड दे १॥ ॥जयः॥ सब भूतोंको जय करै ॥ सत्यसन्धः॥सन्ध नाम संकल्प जिसका सत्य है १॥सत्यसंकल्प है यह श्रुति कहती है ६१० नाम ॥ दाशार्हः॥ दाश नाम दान उसके योग्य १ यदुकुलमें जन्मे २॥ सात्वतांपतिः॥ तंत्रको निर्माण करै १ सात्वत नाम यादवोंके अंशसे उत्पन्न २ सतोगुणी पुरुषोंका पति ३ ॥ ६७ ॥

जीवो विनयितासाक्षी मुकुन्दोऽमित-
विक्रमः ॥ अंभोनिधिरनंतात्मा महो-
दधिशयोंतकः ॥ ६८ ॥

॥जीवः॥क्षेत्रज्ञरूप होकर प्राणोंको धारणेवाला१ ॥विनयितासाक्षी॥धर्मयुक्त जीवोंको साक्षात् जान१ आत्मासे जुदा कोई पदार्थ जो न देखै२॥ मुकुन्दः॥ मुक्तिका दाता ॥अमितविक्रमः॥अनन्तपराक्रमवाला १तीन पैरसे तीन लोक नापैं२बड़ीशूरता है जिसकी३॥ ॥अंभोनिधिः॥अंभ नाम देवतादिक जिसमें लय हो-

तेहैं १ देव पितृ मनुष्य असुर इन चारोंका नाम अंभस यह श्रुतिहै २ अंभोनिधि नाम समुद्र ॥ तालाबोंमें समुद्र मैं हूं यह गीतामें कहाहै॥अनन्तात्मा॥जिसको किसी देश किसी काल किसी वस्तुमें नियम न करसकै १॥ महोदधिशयः ॥ प्रलय करके सब भूतों समेत समुद्रमें शयन करै १ ॥ अन्तकः ॥ भूतोंको अन्त करै ५२० नाम ॥ ६८ ॥

अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः ॥ आनंदो नन्दनो नन्दः सत्य धर्मा त्रिविक्रमः ॥ ६९ ॥

॥ अजः ॥ जिसका जन्म नहीं १ अज नाम कामकाहै॥ ॥ महार्हः ॥ बड़ी पूजाके योग्य ॥ स्वाभाव्यः ॥ स्वभाव करके सदा सिद्धिरूप १॥ जितामित्रः ॥ रावणादिक बाहरके शत्रु और काम क्रोधादिक भीतरके शत्रुको जीतनेवाले ॥ प्रमोदनः ॥ ज्ञानियोंको आत्माका स्वाद अमृतरूप नित्य देनेवाला १ और कथन करनेसे हर्ष देनेवाले २॥ आनन्दः॥ आनन्दस्वरूप १ जिस

आनन्दका लेश सर्वभूतोंमें है यह श्रुतिहै ॥ नन्दनः॥ आनन्ददायक ॥ नन्दः ॥ सबसे बड़ा ऐश्वर्यवान् १ विषयसुखसे रहित आनन्दस्वरूप २॥ सत्यधर्मा ॥ सत्य और धर्म और ज्ञानवाला १सच्चा है धर्म जिसका आचार दया अहिंसा दान स्वाध्याय यह परम धर्महै इनके संयोगसे आत्माका दर्शन २ ॥ त्रिविक्रमः ॥ तीन लोक उल्लंघन करनेवाला १ तीनलोकके नाम लेनेसे वामनजीको त्रिविक्रम हरिवंश पुराणमें कहाहै तीनपद रखता हुआ यह श्रुति है उत्पत्ति पालन संहार तीन पराक्रमवाला ५३० नाम ॥ ६९ ॥

महर्षिः कपिलाचार्यःकृतज्ञो मेदिनी-
पतिः ॥ त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महा-
शृंगः कृतांतकृत् ॥ ७० ॥

॥महर्षिः कपिलाचार्यः॥यह विशेषण सहित एक नाम है जो महान् हो वही ऋषिहो सब वेदोंके जाननेसे वेदका एक देश जाने सो ऋषिःकपिल नाम शुद्धात्म-तत्त्वका उपदेश करनेवाला आचार्य सो कपिलाचार्य

ऋषिका पुत्र जो कपिल है वह महान् है यह श्रुति है सिद्धोंमें कपिल मुनि मैं हूँ यह गीतामें कहाहै ॥कृतज्ञः॥कृत नाम जगत् ज्ञ आत्मा आपही जगत् है आपही आत्माहै १॥ मेदिनीपतिः ॥पृथ्वीका पति॥ ॥त्रिपदः॥ तीन पादहैं जिसके तीन पैर धरता हुआ यह श्रुति है१॥ त्रिदशाध्यक्षः ॥ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्ति तीनों अवस्थाका साक्षी १ ॥ महाशृंगः॥ मत्स्यरूप महाशृंग प्रलयकालमें नाव बनाकर अपनी शृंगमें बांधके क्रीडा करै ॥ कृतांतकृत् ॥ कृत नाम जगत्का अन्तनाम संहार करनेवाला, कृतांत नाम मृत्युको कृत् काटनेवाला २ ॥ ७० ॥

महावराहो गोविंदः सुषेणः कनकांग-
दी ॥ गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रग-
दाधरः ॥ ७१ ॥

॥महावराहः ॥ वराहावतार ॥ गोविंदः॥गो नाम वेदवाक्यसे जो प्राप्त होय१वाणी वा वेदांतवाक्यसे जो जाना जाय सो गोविंद यह विष्णुपुराणमें कहा है ॥

सुषेणः ॥ सुन्दरहै त्रिगुणरूपसेना जिसकी ॥ ६४० नाम॥ कनकांगदी ॥ सोनेकाहै अंगद नाम भुजबंध जिसका ॥ गुह्यः॥रहस्य और उपनिषदोंसे जो जाना जाय१ हृदयरूपी गुफामें प्राप्त २ ॥ गभीरः ॥ ज्ञान ऐश्वर्य बलमें गम्भीर ॥ गहनः ॥ शरीरोंमें प्रवेश होनेवाला१जिसमें प्रवेश करना दुर्घट है२जाग्रत्स्वप्न सुषुप्ति तीनों अवस्थाके भाव अभावका साक्षी॥३॥ ॥गुप्तः॥मन वाणी जहां न पहुँचे सबमें छिपाहुवा१॥ सबभूतोंमें एक आत्मा छिपा है प्रकाश नहीं करता यह श्रुतिहै ॥चक्रगदाधरः॥ चक्र और गदाको धारण करनेवाले ॥ ७१ ॥

वेधाः स्वांगोजितः कृष्णो दृढः संक-
र्षणोऽच्युतः ॥ वरुणो वारुणो वृक्षः
पुष्कराक्षो महामनाः ॥ ७२ ॥

॥वेधाः ॥ ब्रह्म रूप होकर जगत्को रचनेवाला ॥ स्वांगः॥ आपही कार्य और कारण अपने अंगसे रचनेवाला ॥ अजितः ॥ अवतार धारके किसीसे जीता न जाय ॥ कृष्णः ॥ द्वैपायन नाम व्यासको

कृष्ण जानो १ नारायण जानो कृष्णके सिवाय और किसकी सामर्थ्य महाभारत बनानेकी है २ यह विष्णु पुराणमें कहाहै सब मुनियोंमें व्यास मैं हूँ यह गीतामें कहाहै ६६०नाम॥दृढः॥जिसके स्वरूप और सामर्थ्य का नाश नहीं है॥संकर्षणोऽच्युतः॥प्रलयकालमेंएक-हीबेर सब प्रजाको खींचनेवाला नाश रहित स्वभावसे विशेषणसहित एक नामहै १॥ वरुणः॥ वरुण नाम सूर्य वा जल इनको प्राप्त होय १ वरुण सूर्य है यह श्रुति है ॥ वारुणः ॥ वरुणकी संतान वसिष्ठ वा अगस्त्य १॥ वृक्षः ॥ वृक्षका सा अचल स्वभाव है जिसका १ वृक्षकी तरह अचल है यह श्रुतिहै ॥ ॥ पुष्कराक्षः ॥ हृदय कमलमें चिंतन होय जिसका १ स्वरूप जिसका प्रकाशवान् है २ ॥ महामनाः ॥ उत्पत्ति स्थिति प्रलय अपने मनसे करनेवाला ॥७२॥

भगवान् भगहानंदी वनमाली हला-
युधः ॥ आदित्यो ज्योतिरादित्यः
सहिष्णुर्गतिसत्तमः ॥ ७३ ॥

॥भगवान्॥ ऐश्वर्य,धर्म,यश,श्री,वैराग्य,मोक्ष,इन छः पदार्थोंका नाम भगहै जिसमें भग रहै सो भगवान् १ जिसको इन छः पदार्थोंका यथार्थ ज्ञान होय२भूतोंकी उत्पत्ति लय गति अगति विविद्या अविद्या इन छः वस्तुका जाननेवाला ३ ॥ भगहा ॥ प्रलयकालमें ऐश्वर्यादि भगका नाशक १॥आनंदी॥सुखरूपसर्वसंपत्तियुक्त १।५६०नाम॥वनमाली॥पंचभूततन्मात्रारूपी वैजयंती नाम वनमाला है जिसकी १ तुलसी कुन्द मदार पारिजात कमल इन पांच फूलोंसे बनै सो वनमाला पांवतक लटकती हुईमाला वनमाला जिसकी२ ॥हलायुधः॥हल जिसका शस्त्रहै बलदेवमूर्ति १जरासंधकी लडाईके समय हल मुसल आकाशसे उतरा यह विष्णुपुराणमें लिखाहै ॥ आदित्यः॥ अदितिमें कश्यपसे उत्पन्न वामनरूप१॥ ज्योतिरादित्यः॥सूर्य मंडल जिसमेंज्योति रहतीहै १ आपहीज्योतिआपही आदित्य २ ॥ सहिष्णुः ॥ शीतोष्ण और दुःख सुखको सहनेवाला १ ॥ गतिसत्तमः ॥ आपहीगति रूप आपही सत्तमश्रेष्ठ ॥ ७३ ॥

सुधन्वाखंडपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः ॥
दिविस्पृक्सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिर-
योनिजः ॥ ७४ ॥

॥सुधन्वा ॥ सुंदर इंद्रियरूपी धनुषहै जिसका १ खंडपरशुः॥ शत्रुओंका खंडन करनेवाला परशाधारे परशुरामरूप १ अथवा शिवरूप २ अखंड है नाम अमोघ है परशा जिसका ३ ॥ दारुणः ॥सन्मार्गके विरोधियोंको मारनेवाला १॥ द्रविणप्रदः ॥ भक्तोंको वांछित फलका देनेवाला ६७०नाम ॥ दिविस्पृक् ॥ दिव नाम स्वर्गका स्पर्श करनेवाला॥सर्वदृग्व्यासः॥ सर्वदृष्टिवाले जो सर्वज्ञ उसका विस्तार करनेवाला व्यास १ आपही सर्व और आपहीं द्रष्टा २ जिसने चारों वेदकी शाखा करदी ऋग्वेदकी २१ यजुर्वेदकी १०१ सामवेदकी १००० अथर्वण वेदकी ९ और १८ पुराणोंका कर्ता ॥ वाचस्पतिरयोनिजः ॥ वाच नाम विद्याका पति ॥ अयोनिजः ॥ माताकी योनिसे जिसकाजन्मनहीं यह नाम ब्रह्माकाहै॥७४॥

त्रिसामासामगःसाम निर्वाणं भेषजं भिषक् ॥ संन्यासकृच्छमः शांतो निष्ठा शांतिः परायणः ॥ ७५ ॥

॥ त्रिसामा॥ त्रिसाम नाम,वेदव्रतकाहै तीनोंवेदके व्रतसे जिसकी स्तुति होय१॥सामगःसामवेदकागाने· वाला १ सामवेदने जिसको गायाहै २ ॥ साम ॥साम वेद १ वेदोंमें सामवेदमैं हूँ यह गीतामें कहाहै॥निर्वा· णम् ॥ सर्वदुःख नाशरूप परमानंद लक्षणरूप॥ भेषजम्॥संसारसे छूटनेकीदवा॥भिषक्॥ संसाररूपी रोगके नाश करनेवाले मोक्षरूपब्रह्मविद्या उपनिषद् गीता सब रोगके वैद्य होय यह श्रुतिहै॥संन्यासकृत्॥ मोक्षके वास्ते चौथा आश्रम करनेवाला १ ॥ ६८० नाम॥शमः॥संन्यासियोंको ज्ञानकोसाधनशमरूप१ ज्ञानका साधन शम २ सदा संन्यासीका मुख्य धर्म शमता है ३ वानप्रस्थोंका नियम गृह· स्थोंका केवल दान ब्रह्मचारीका गुरुसेवा यह स्मृतिहै सब भूतोंको शमन करनेवाला४ ॥ शांतः ॥ विषयसु·

त्वमें संगरहित १ क्रिया और कलंकसे रहित है शांत है यह श्रुति है ॥ निष्ठा ॥ प्रलयकालमें सब भूत जिसमें रहें॥शांतिः॥ ब्रह्मविद्या १ समतासे अविद्याका नाश २ ॥ परायणः ॥ पर अनय नाम स्थान जहां जायके फेर नहीं आवे ॥ ७८ ॥

शुभांगः शांतिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः ॥ गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः ॥ ७९ ॥

॥ शुभांगः ॥ शोभावन् अंग १॥ शांतिदः॥रागद्वेष खोनेवाला शांतिके दाता॥ स्रष्टा ॥ सृष्टिके आदिमें सब भूतोंका रचनेवाला ॥ कुमुदः ॥ कु नाम पृथ्वीमें आनंदपानेवाला १ पृथ्वीको आनंद देनेवाला २॥कुवलेशयः ॥ पृथ्वीको सब दिशासे ढकनेवाला १ कुवल नाम जल उसमें शेषनागपर सोनेवाला २ कुवलनाम बेरका फल उसमें तक्षकरूप होके सोनेवाला ३ कु नाम भूमि वल नाम चलन ऐसा जो सर्पका पेट उसपर सोनेवाला४॥ ६९० नाम ॥ गोहितः॥ गऊके

बढावनेके वास्ते गोवर्द्धन पर्वतरूप १ गऊको प्यार करे२गोनाम भूमिके भार उतारनेको अपनी इच्छासे अवतार धारनेवाला २ ॥ गोपतिः ॥ पृथ्वी गऊ इंद्रियोंके पति नाम पालक १ ॥ गोप्ता ॥ जगत्के रक्षक १ अपनी मायासे अपने आत्माको आच्छादन करनेवाला २ ॥ वृषभाक्षः ॥ सब कामना बरसावने-वाला १ धर्मरूप पवित्रदृष्टि है जिसकी २ ॥ वृष-प्रियः ॥ धर्म प्यारा है जिसको ॥ ७६ ॥

अनिवर्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृ-च्छिवः ॥ श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्री-पतिः श्रीमतांवरः ॥ ७७ ॥

॥ अनिवर्ती ॥ देवता और असुरोंके संग्रामसे जो छुट्टी न पावैं १ जो धर्म न छोड़ैं २॥ निवृत्तात्मा॥ स्वाभाविक जिसकी आत्मानाममन विषयोंसे निवृत्त है १ ॥ संक्षेप्ता ॥ जगत्के विस्तारको प्रलयमें घटानेवाला ॥ क्षेमकृत् ॥ शरण आयेकी रक्षाकरै१॥ ॥शिवः॥स्मरणमात्रसे पाप खोनेवाला१॥६००नाम

॥ श्रीवत्सवक्षाः ॥ श्रीवत्स नाम छापा है छातीपर जिसके १ ॥ श्रीवासः ॥ जिसके हृदयमें नित्य लक्ष्मी वसै १॥श्रीपतिः ॥ समुद्रमथनके समयमें सब देवतोंको छोड़कर लक्ष्मीने जिसको अपना वर किया १ परमशक्तिके पति२ ॥ श्रीमतांवरः॥ तीनों वेदरूप श्री है जिसकी १ब्रह्मादिक श्रीमानोंसे उत्तम ॥७७॥

श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः
श्रीविभावनः ॥ श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः
श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः ॥ ७८ ॥

॥ श्रीदः ॥ भक्तोंको श्री देनेवाले १ ॥ श्रीशः॥ लक्ष्मीके स्वामी मालिक१॥श्रीनिवासः ॥लक्ष्मीवा-नोंमें नित्य वसैं१लक्ष्मी जहां रहैं२॥श्रीनिधिः॥जिस सर्वशक्तिरूपमें संपूर्ण श्री स्थापन होय१॥श्रीविभा-वनः॥ कर्मके अनुसार नानाप्रकारकी श्री सर्वभूतोंको देनेवाला १॥श्रीधरः॥ सर्वभूतोंको उत्पन्न करनेवाले १लक्ष्मीको छातीपर धारे २॥६१०नाम॥ श्रीकरः॥

श्रवण,स्मरण,स्तुति,ध्यान,पूजा करनेवालोंको ऐश्वर्य देनेवाले १ ॥ श्रेयः ॥ कल्याणरूप परब्रह्म १ नाशरहित सुखकी प्राप्तिका नाम श्रेय है२॥श्रीमान्॥सदा लक्ष्मीसहित १॥ लोकत्रयाश्रयः ॥ तीनों लोकोंका आधारभूत ॥ ७८ ॥

स्वक्षः स्वंगः शतानंदो नंदिर्ज्योतिर्गणेश्वरः ॥ विजितात्माविधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः ॥ ७९ ॥

॥ स्वक्षः ॥ कमलकीसी सोहनी आँखोंवाले१॥ ॥स्वंगः॥ अच्छे सुंदर अंगवाले १॥ शतानंदः॥ एक परमानंद जो भेदसे अनेक आनंदरूप हुआ है १ एकी आनंदके आसरे सबभूत जीते हैं यह श्रुति है ॥ नंदिः ॥परमानंदरूप १ ॥ ज्योतिर्गणेश्वरः ॥ सब चमकनेवाले समूहके ईश्वर १ उसी प्रकाशसे सब प्रकाश करतेहैं यह श्रुतिहै । सूर्य,चंद्रमा, अग्निमें मेराही तेज है यह गीतामें कहाहै ॥ विजितात्मा ॥ मनको जीतनेवाला १॥६२० नाम ॥ अविधेयात्मा ॥ जिस

आत्माका विधान नाम कथन न होसके १॥सत्कीर्तिः॥ सत्यहै सत्कीर्ति जिसकी १॥छिन्नसंशयः॥हस्तामलक वत् साक्षात् ज्ञानसे जिसको कोई संदेह न रहै १॥७९॥

उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वत-
स्थिरः ॥ भूशयो भूषणो भूतिर्विशो-
कः शोकनाशनः ॥८० ॥

॥उदीर्णः ॥ सब जगतसे श्रेष्ठ १॥ सर्वतश्चक्षुः ॥ सबको अपना चैतन्यरूप देखै १ सबदिशामें हैं नेत्र जिसके यह श्रुति है ॥ अनीशः ॥ जिसको कोई बड़ा नहीं १ ॥ शाश्वतस्थिरः ॥ सजा होनेपर भी विकार नहीं जिस्में ॥ दोनों पदोंका एकही नाम है ॥ भूशयः ॥ लंकाजानेके समय समुद्रके तटपर भूमिपर सोनेवाला १ ॥ भूषणः ॥ अपनी इच्छासे अवतारादिक धारकर पृथ्वीको शोभा देनेवाले १ ॥ भूतिः॥होनेवाली शक्तिविभूति सब विभूतिका कर्ता १ ६३० नाम॥विशोकः॥शोकरहितः परमानन्दरूप १॥

॥शोकनाशनः॥स्मरणसे भक्तोंके शोक नाशकरै८०॥

अर्चिष्मानर्चितः कुंभो विशुद्धात्मा विशोधनः ॥अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्यु-म्नोऽमितविक्रमः ॥ ८१ ॥

॥अर्चिष्मान्॥ जिसके प्रकाशसे सूर्य चंद्रमा प्रकाश करते हैं १ अर्चि नाम किरणवाले सूर्यरूप चंद्रमारूप २ ॥अर्चितः॥सब लोकके पूज्य ब्रह्मादिक देवतोंके पूज्य १॥ कुंभः ॥ घडेकेरूप जिसमें सब वस्तु भरी जायँ १॥ विशुद्धात्मा ॥ तीनोंगुणोंसे रहित॥ ॥विशोधनः॥ स्मरणसे पाप दूर करै १॥ अनिरुद्धः॥ चारमूर्तियोंमें अनिरुद्धरूप १ जो लड़ाईमें किसीसे न रुके २ ॥अप्रतिरथ॥वैरी जिसके नहीं १॥प्रद्युम्नः॥ प्र उत्तम द्युम्न नाम द्रव्य है जिसके १ चारमूर्तिमें प्रद्युम्न रूप२॥६४०नाम ॥ अमितविक्रमः॥ वे प्रमाण बलवाले १ हिंसारहित पराक्रमहै जिसका२अपरिच्छिन्न पराक्रमवाला ३ ॥ ८१ ॥

कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः॥ त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः ॥ ८२ ॥

॥कालनेमिनिहा॥ कालनेमि नाम दैत्यको मारनेवाला १ ॥ वीरः ॥ अगले पिछले शत्रुका नाशक॥ ॥शौरिः॥ शूरकुलमें अवतार लेनेवाला १॥ शूरजनेश्वरः ॥ शूरतामें इंद्रादिक देवतोंसे अधिक ऐश्वर्यवाला १ ॥ त्रिलोकात्मा ॥ तीनों लोकका अंतर्यामी आत्मा १ तीनों लोकमें अभेद आत्मारूप२॥ त्रिलोकेशः ॥ तीनोंलोकका स्वामी १॥ तीनों लोक जिसकी आज्ञासे अपने अपने मार्गमें चलैं २ ॥ केशवः ॥ सूर्यादिककी किरण जिसके केशहैं १ ब्रह्मा विष्णु शक्ति गणेश नामहैं जिसके २ क नाम ब्रह्मा ईश नाम शिव दोनों तुम्हारे अंश हैं यह हरिवंशपुराणमें है ॥ केशिहा ॥ केशी दैत्यके मारनेवाले १ ॥ हरिः ॥ अज्ञान सहित संसारको हरै १ ॥ ६५० नाम ॥८२॥

कामदेवः कामपालः कामी कांतः कृतागमः ॥ अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनंतो धनंजयः ॥ ८३ ॥

॥कामदेवः॥ धर्म, अर्थ, काम, मोक्षके चाहनेवाले जिसकी पूजा करैं सो कामदेव ॥ कामपालः ॥ कामनावालोंके काम पूरण करै ॥ कामी ॥ पूरण काम जिसको कामना न रहै सरस्वतीके वास्ते कामना की यह श्रुति है ॥ कांतः ॥ परमसुंदररूप १ क नाम ब्रह्माका दो परार्द्ध नाम १०९वर्षमें अंत करै ॥ ॥ कृतागमः ॥ श्रुतिस्मृतिके कर्ता वेद शास्त्र विज्ञान यह सब जनार्दनसे भये विष्णुसहस्रनाममें कहाहै १॥ ॥अनिर्देश्यवपुः॥ जिसके शरीरको यह है ऐसा न कहा-जाय १ सबगुणोंसे रहित शरीर है जिसका २॥ विष्णुः॥ सारे जगत्में व्याप्त जिसकी कांति अधिक करकेहै ॥ वीरः ॥ कांति नाम वेग अथवा कांतिवाले ॥ अनंतः॥ व्यापक नित्य सबका आत्मा देशकालवस्तु-के नियमसे रहित सत्य है ज्ञानरूप है अनंत है । यह

श्रुति है २ देवता जिसके गुणोंका अंत न पावैं यह विष्णुपुराणमें है ३ ॥ धनंजयः ॥ दिग्विजय करके धन लेनेवाला अर्जुन १ पांडवोंमें धनंजय मैं हूँ यह गीतामें कहा है ६६० नाम ॥ ८३ ॥

ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविव-
र्धनः ॥ ब्रह्मविद्ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो
ब्राह्मणप्रियः ॥ ८४ ॥

॥ ब्रह्मण्यः ॥ तप वेद सत्य ज्ञान इन पदार्थोंको जाननेवाले १ इन्हीं पदार्थोंसे जानने योग्य और हितकारी नर नारायण रूपसे तप किया२ब्राह्मणजातिके रक्षाके वास्ते अवतार धारा राक्षसोंको मारके वेदकी रक्षा की ३ अर्जुनको ज्ञानदिया ४ ॥ ब्रह्मकृत् ॥ तप-वेद, सत्य, ज्ञानका कर्ता १॥ ब्रह्मा॥ब्रह्मारूपसे सबका रचनेवाला १॥ ब्रह्म ॥ सत्यादिक चार पदार्थके बढ़ने अथवा बढ़ावनेसे सत्य है ज्ञानस्वरूप है अनंत है यह श्रुति है ॥ ब्रह्मविवर्द्धनः ॥ तप आदिक चारों पदार्थंको बढ़ावनेवाला ॥ ब्रह्मविद्॥वेदके अर्थ और वेद-

को जो यथार्थ जानै ॥ ब्राह्मणः ॥ ब्रह्मारूपसे सबलो-
कको वेद देनेवाला १ ॥ ब्रह्मी ॥ जगत् ब्रह्मरूपको
धारनेवाला १ ॥ ब्रह्मज्ञः ॥ ब्रह्मको जाननेवाला १ ॥ ब्रा-
ह्मणप्रियः ॥ ब्राह्मणोंका प्रिय १ जिसको ब्राह्मण प्रिय है
२ ब्राह्मण मारता हुआ गाली देता हुआ शाप देता हो
तो भी पूज्य है जो ब्राह्मणको प्रणाम न करै सो
ब्रह्म अग्निसे दग्ध है दहनके योग्य है मेरा नहीं है
यह भगवद्वाक्य है ६७० नाम ॥ ८४ ॥

महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महो-
रगः ॥ महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो
महाकविः ॥ ८५ ॥

॥ महाक्रमः ॥ बड़ेक्रमवाले १ क्रम नाम चरण धर-
तीरूपी बड़े चरण है जिसके २ बड़े क्रमवाले विष्णु
मुझे पवित्र करौ यह श्रुति है ॥ महाकर्मा ॥ महान्
जगत्के रचने और पालने और नाश करनेरूप हैं
कर्म जिसके १ ॥ महातेजा ॥ बड़े तेजवाले १ सूर्यादिक
जिसके तेजसे होंय २ जिसके तेजको पाकर सूर्य तप-

ताहै यह श्रुति है सूर्यमें मेरा ही तेज है यह गीतामें है अपनी क्रूरता और वीरतासे सबको लड़ाईमें तृप्त करै ३ ॥ महोरगः ॥ बड़ा सर्प १ सर्पोंमें वासुकि मैं हूं यह गीतामें है ॥ महाक्रतुः॥ आपही बड़ाहै:आपही यज्ञ है जैसे अश्वमेध यज्ञोंका राजाहै सो नारायणरूप हैं ॥ महायज्वा ॥ आपही बडा हैं आपही यज्ञकरनेवाला है जगत्के उद्धारके वास्ते यज्ञका प्रचारक॥ महायज्ञः ॥ आपही बडाहै आपही यज्ञ है यज्ञोंमें जपयज्ञ मैं हूं यह गीतामें है १ ॥ महाहविः ॥ आपही बड़ा है आपही हवि नाम होमकरनेका अन्न और घी है जिस परमात्मामें सब जगत् होमा-जाय ॥ ८५ ॥

स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तो-
तारणप्रियः ॥ पूर्णः पूरयिता पुण्यः
पुण्यकीर्तिरनामयः ॥ ८६ ॥

॥स्तव्यः॥उसकी सब स्तुति करते हैं वह किसीकी स्तुति न करै १ स्तुति करनेवालोंके स्तुतियोग्य २॥

आपही स्तुतिरूपहै १ ॥ स्तवप्रियः॥ स्तुतिप्यारी है जिसको १ ॥ ६८० नाम॥ स्तोत्रम् ॥ गुणवर्णनरूपहीं १ जिस शब्दसे स्तुतिकरै सो स्तोत्र आपही स्तोत्रहै ॥ स्तुतिः ॥ आपही स्तुतिरूप है १ ॥ स्तोता ॥ आपही स्तुति करनेवाला १ ॥ रणप्रियः ॥ रण है प्यारा जिसको १ लोकके देखानेके वास्ते पांच आयुध रखनेवाले ६ ॥ पूर्णः ॥ संपूर्ण काम और शक्ति वाले १ ॥ पूरयिता ॥ सब ऋद्धि और सब शक्तिसे कामना पूरणकरनेवाले। कुछ आपही पूरण नहीं है सबको सब संपदसे पूरणकरनेवाले २ ॥ पुण्यः ॥ स्मरणकरनेसे पापोंका नाश करै ॥ पुण्यकीर्तिः ॥ पवित्रहै यश और कीर्ति जिसकी १ आदमियोंको जिसकी कीर्ति पवित्र करै २ ॥ अनामयः ॥ कर्मसे उत्पन्न होनेवाली आधि और व्याधिसे रहित अनामय नाम रोगसे रहित ॥ ८६ ॥

मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः॥
वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः ८७॥

॥मनोजवः॥मनकी तरह जलदीदौडनेवाले१॥६९० नाम॥तीर्थकरः॥ चौदह विद्या और उपविद्या सबका कर्ता॥ वसुरेताः ॥ सुवर्ण है बीज जिसका१सृष्टिकी आदिमें जलमें तेजका त्याग कियाउससे सोनेका अंडा सूर्यकीतरह प्रकाशित२॥ वसुप्रदः ॥भक्तोंको धनदाता १ धनके दाता कुबेर २॥ वसुप्रदः ॥ दैत्योंके धनको नाश करै १ ॥ वासुदेवः ॥ वसुदेवके बेटे १॥ वसुः॥ जिसमें सब भूत वसैं१ सब भूतोंमें वसनेवाला२माया से जो अपने स्वरूपको छिपाले ३ सबदेश सब काल सब वस्तुमें जो बराबर वसै ४ ॥ वसुमनाः ॥ तद्रूप है मन जिसका सबमें बराबर बसे सो वस्तु वसु है मन जिसका २॥ हविः ॥ होमकी साकल्य हवि ब्रह्म है यह गीतामें है १ ॥ ८७ ॥

सद्गतिः सत्कृतिःसत्ता सद्भूतिःसत्प-
परायणः ॥ शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्नि-
वासः सुयामनः ॥ ८८ ॥

॥ सद्गतिः ॥ ब्रह्म है ऐसा निश्चय करनेवालेकी जो

गति वह सद्गति १ श्रेष्ठ बुद्धिवाला २ ॥ सत्कृतिः ॥ जगत
की उत्पत्ति पालन लयजिसकी क्रियाहै ॥ ७०० नाम ॥
सत्ता ॥ सजातीय नाम अपना विजातीय नाम दूसरा
स्वगत नाम दैहिक इन भेदसे रहित जो अनुभव १
एक ब्रह्महै दूसरा नहीं यह श्रुति है ॥ सद्भूतिः ॥
एक आत्मा बहुत प्रकार देखाई देवे १ तेरे निश्चय
होनेसे और कुछ नहीं है क्योंकि सब एक है ॥ सत्प
रायणः सत् नाम तत्त्ववेत्ता पर नाम श्रेष्ठ अयन
नाम स्थान ॥ शूरसेनः ॥ हनूमानादिक शूर वी
जिसकी सेना है १ ॥ यदुश्रेष्ठः ॥ यादव कुलमें श्रेष्ठ १
सन्निवासः ॥ सत्पुरुषोंके रहनेकी जगह १ ॥ सुया
मनः ॥ सोहावनी यमुनाकी आवर्त चारों ओर है
जिसके १ गोपवेषधारी पद्मासनादिक गोपों करके
आवृत यामुनः ॥ नाम चारोंतरफ घेरनेवाले ॥ ८८ ॥

भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनि-
लयोऽनलः ॥ दर्पहा दर्पदो दृप्तो दु-
र्धरोऽथापराजितः ॥ ८९ ॥

॥ भूतावासः ॥ सब भूतोंको रहनेकी जगह १ ॥ जिसमें सब भूत बसें यह हरिवंशपुराणमें है ॥ वासुदेवः मायासे जगत्को छिपालेनेवाले १ अपनी विभूति और ऐश्वर्यसे जगत्को ढक लेता हूँ यह भगवद्वचन है छिपाताहूँ सब जगत्को सूरजकी तरह अपनी किरणोंसे यह महाभारत मोक्षधर्महै॥सर्वासुनिलयः॥ सबप्राण जिसमें लय होजाँय१॥७१०नाम अनलः॥ जिसकी शक्ति और संपत अनंत है १॥दर्पहा॥ अधर्मियोंका दर्प नाम अहंकार हरनेवाला १॥ दर्पदः॥ धर्मवालोंको दर्प देनेवालेनाम रक्षाकरनेवाले१॥दृप्तः॥ आत्मारूपी अमृतका स्वाद जिसको सदाहै॥दुर्द्धरः॥ बहुत दुःखोंसे जिसकी धारणा होय अव्यक्तमें मन लगानेवालेको बहुत क्लेश है अव्यक्तमें गति नाम पहुँच दुःखसे भी देहवालेको नहीं होती यह गीतामें कहाहै॥अपराजितः॥भीतरके शत्रु रागद्वेषादिक और बाहरके दानवादिकसे जीता न जाय ॥ ८९ ॥

विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमा-न् ॥ अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः ॥ ९० ॥

विश्वमूर्तिः॥सब विश्व जिसका मूर्तिहै १॥ महामूर्तिः ॥शेषनागपर सोनेवाली बडी मूर्ति ॥ दीप्तमूर्तिः ॥ ज्ञानमयी और तैजसी मूर्ति है जिसकी ॥ अमूर्तिमान्॥शेषनागपर सोनेवाली बड़ी मूर्ति होकर नाम भेद करके बहुत मूर्ति नहीं १॥७२० नामअनेकमूर्तिःउपकारके अर्थ अनेकमूर्तिवाले२॥ अव्यक्तः ॥ अनेक मूर्तिवाला भीहै तो भी उसकोयहहै और ऐसा है नहीं कहसक्ते १ ॥ शतमूर्तिः ॥ ज्ञानरूपमूर्ति ॥ शताननः ॥ जिससे जगत् मूर्तिमान् है ॥ जिससे सब भूत होय यह श्रुति है ॥ ९० ॥

एको नैकः सवः कः किं यत्तत्पदमनुत्तमम् ॥ लोकबंधुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः ॥ ९१ ॥

॥एकः॥एक श्रुति है एक है जिसके दूसरा नहीं॥ नैकः ॥ अपनी मायासे जगत्‌रूप होनेवाला १ इंद्र माया करके बहुतरूपवाला हुवा यह श्रुति है ॥ ॥ सवः ॥ जिस यज्ञमें सोमपान होय १ ॥ कः ॥ सुखरूप १ ब्रह्मरूप २ क ब्रह्म है यह श्रुति है ॥ किम्॥सब पुरुषार्थका स्वरूप जिससे सबभूत होयँ यह श्रुति है ॥ यत् ॥ स्वतःसिद्ध जिससे भूतोंकी उत्पत्ति पालन लय होय यह श्रुति है ॥ तत् ॥ विस्तार करनेवाला ब्रह्म, ब्रह्मके तीननाम हैं प्रणव १ तत् २ सत् ३गीतामें हैं॥पदमनुत्तमम्॥७३० नाम ॥ जिस उत्तम पदको मुमुक्षु लोग प्राप्त होयँ१जिससे कोई उत्तम पद न होय २ ॥ लोकबंधुः ॥ आधाररूप परमात्मासे सब लोग बँधे हैं१लोकोंका जनक है दूसरा बंधु नहीं है श्रुति स्मृतिरूप हित अहित जीवोंको उपदेश करै२॥ ॥ लोकनाथः ॥ सब लोक जिससे मांगें १ दैत्योंको दंड देनेवाला २ ॥ माधवः ॥ मधुकुलमें उत्पन्न १ ॥ भक्तवत्सलः ॥ भक्तोंपर कृपा करै ॥ ९१ ॥

सुवर्णवर्णो हेमांगो वरांगश्चंदनांग-
दी ॥ वीरहा विषमः शून्यो घृता-
शीरचलश्चलः ॥ ९२ ॥

॥ सुवर्णवर्णः ॥ सोनेके रंग १ रुक्मवर्णको देखो यह श्रुति है ॥ हेमांगः ॥ सोनेका सा अंग १ जो एक सूर्यमंडलमें हिरण्मय पुरुष है यह श्रुति है ॥वरांगः॥श्रेष्ठ है अंग जिसका ॥ चंदनांगदी॥चंदन लगाये हुए अंगद नाम बाजूबंध पहिरे हैं १ चंदन नाम आनंददेनेवाला अंगदनाम बाहुभूषणहैजिसका२ ७४०नाम ॥ वीरहा ॥ धर्मकी रक्षाके वास्ते वीर दैत्योंका मारनेवाला१रागद्वेष कामादिकको दूर करै २ ॥ विषमः ॥ सम नाम बराबर जिसके कोई नहीं है१तुम्हारे सम कोई नहीं तो अधिक कहांसे होयगा यह गीतामें है॥शून्यः॥सब गुणोंसे पर है १शून्यकी तरह शून्य २ ॥ घृताशीः ॥ आशी नाम कामना घृत नाम क्षय दूर होगई है चाहना जिसकी १ ॥ ॥अचलः॥स्वरूप सामर्थ्य गुण जिसके अचल हैं१॥ ॥ चलः ॥ वायुरूप होकर चलनेवाला ॥ ९२ ॥

अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक् ॥ सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः ॥ ९३ ॥

॥अमानी॥ अनात्मवस्तुमेंअभिमाननहींकरनेवाले १ मानरहितशुद्धज्ञानस्वरूप२ जिसकीप्रमानाम हद्द नहीं ३॥ मानदः ॥अपनी मायासे जीवोंको आत्मा-में आत्मारूपीअभिमान देनेवाला १ भक्तोंकोमानदे-नेवाला २ दैत्योंका मानतोड़नेवाला ३ ज्ञानियोंका देहाभिमानदूरकरनेवाला ४॥मान्यः ॥ सबकामान्य नामपूज्य १ ॥ लोकस्वामी ॥ चौदहलोकोंकास्वामी नाम ईश्वर१ ॥ ७६० नाम ॥ त्रिलोकधृक् ॥ तीनों लोकोंका धारण करनेवाला १॥सुमेधाः॥ उत्तमबुद्धि वाला१॥ मेधजः ॥ यज्ञमेंप्रकाशितहोय १ ॥ धन्य कृतार्थरूप १ ॥ सत्यमेधाः ॥ सत्यस्वरूप नामवि-काररहित बुद्धि जिसकी१॥धराधरः ॥ शेषसे आदि अपने वेप्रमाण अंशोंसे पृथ्वीको उठावे ॥ ९३ ॥

तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतांवरः॥प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकशृंगो गदाग्रजः ॥ ९४॥

॥ तेजोवृषः ॥ आदित्यरूप होकर वरसानेवाला १ जलको सूरजरूपसे खींचकर वरसानेवाला २ ॥ ॥ द्युतिधरः ॥ शरीरकी कांतिवाला १ सत्पुरुषोंकी कीर्ति धारणेवाला २ ॥ सर्वशस्त्रभृतांवरः ॥ सब हथियार रखनेवालोंमें श्रेष्ठ १ ॥ प्रग्रहः ॥ भक्तोंके अर्पण किये हुये पत्र फूल फल जल प्रसन्नतासे ग्रहण करै १ दुर्दांत इंद्रियरूपी घोड़े विषय रूपी जंगलमें दौडतेहुये जिसके प्रसादसे प्रग्रह नाम पगहेमें बंध जातेहैं २ ॥ ७६० नाम ॥ निग्रहः ॥ सबको अपने वश करनेवाले १ ॥ व्यग्रः ॥ नाशरहित १ भक्तोंको इष्ट नाम मनोरथदाता २ ॥ नैकशृंगः ॥ चारशृंगवाले १ चार शृंग तीन पांव दो शिखा सात हाथ यह श्रुति है २ ॥ गदाग्रजः ॥ गद नाम यादवके बडे भाई वासुदेव है निगद नाम मंत्रसे सामने प्रगट होय ॥ ९४ ॥

चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः ॥ चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात् ॥ ९५ ॥

॥ चतुर्मूर्तिः ॥ विराट् १ सूत्र २ अव्याकृत नाम वेदांतका सिद्धांत ३ तुरीय आत्मा ४ यह चार मूर्तिहैं जिसकी १ श्वेत रक्त पीत कृष्ण चार रंगकी मूर्तिवाले २ ॥

चतुर्बाहुः॥ चार भुजावाले यह नाम वासुदेवमें रूढ है क्योंकि चारभुजा और देवताओंके भी हैं पर चतुर्भुज वासुदेवही कहावते हैं १ ॥ चतुर्व्यूहः ॥ शरीरपुरुष १ वेदपुरुष २महापुरुष ३ छंदपुरुष ४ इन चार व्यूहवाले २॥ चतुर्गतिः ॥ चारों वर्ण चारों आश्रमके स्वधर्म करनेवालोंकी जो गतिरूपहैं॥चतुरात्मा रागद्वेषादिकसे रहित ऐसा चतुर है मन जिसका १मन चित्त बुद्धि और अहंकार चार आत्मावाले२ ॥ चतुर्भावः॥ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष यह चार जिससे उत्पन्नहैं १॥ ७७० नाम ॥ चतुर्वेदवित् ॥ चारों वेदोंको यथार्थ जाननेवाले १ ॥ एकपात् ॥ एकचरणवाले १ सारा विश्व जिसका चरणहै यह श्रुति है सारा,जगत् मेरे एक अंशसे स्थित है यह गीताहै१० अध्यायमें ॥ ९९ ॥

समावर्तोऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः ॥
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा॥९६॥

॥समावर्तः॥संसारचक्रको जो अच्छी तरह घुमावे १॥अनिवृत्तात्मा॥ सर्व व्यापक होनेसे जिसकी आत्मा किसी पदार्थसे पृथक् नहीं है १ निर्वृत्त है सब विषयोंसे आत्मा जिसका २ इस अर्थसे निवृत्तात्मा·

नाम है ॥ दुर्जयः ॥ किसीसे जीता न जाय १ ॥ ॥दुरतिक्रमः॥ जिसके भयसे सूर्यादिक आज्ञा मानतेहैं १ जिसके भयसे वायु बहता है सूर्य तपताहै इंद्र वर्षताहै आग जलताहै जिसके डरसे मौत मारती है यह महाभारतमें है ॥दुर्लभः॥ दुर्लभ भक्तिसे मिलता है १ हजारों जन्मोंके तप ध्यान समाधि करनेसे कृष्ण भक्ति होती है यह व्यासका वचनहै १ अनन्य भक्तिसे मिलता है यह गीतामें कहाहै २ ॥ दुर्गमः॥ दुःखसे जानाजाय १॥दुर्गः॥सब विषयोंके दूर होनेपरभी बडे दुःखसे जानाजाय १॥दुरावासः॥योगियोंके हृदयमें कष्टकी बड़े समाधिसे वसे १॥७८० नाम॥ ॥दुरारिहा॥दुष्ट वैरी जो दानव उनका नाशक१॥९६

शुभांगो लोकसारंगः सुतंतुस्तंतुवर्धनः ॥
इंद्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः॥९७॥

॥शुभांगः॥सुन्दर अंग ध्यानके योग्य १॥लोकसारंगः॥ लोकसार नाम भक्तिको सारंग धनुषकी तरह धारण करतेहैं १॥लोकसार नाम प्रणवसे जो प्राप्त होय२॥ सुतंतुः॥ सुन्दरहै जगत्के विस्ताररूपी तंतु जिसका१॥ तंतुवर्द्धनः॥संसाररूपतंतुको बढावनेवाले१ संसाररू-

पीतंतुको काटै २ ॥इंद्रकर्मा॥ इन्द्रकेसे कर्म जिसके हैं १ ॥ ऐश्वर्यके कर्म हैं जिसके २ ॥ महाकर्मा ॥ आकाशादिक पंचभूतका कर्ता १ ॥ कृतकर्मा ॥ जो सम्पूर्ण कर्मको करचुके और कुछ करना बाकी न रहै १धर्मरूपी कर्मका स्थापनकरनेवाला २॥ कृतागमः॥ आगम नाम वेदका कर्ता १ जिस महद्भूतका वेद श्वास है यह श्रुति है ॥ ९७ ॥

उद्भवः सुंदरः सुंदो रत्ननाभः सुलोचनः ॥
अर्कोवाजसनः शृंगी जयंतः सर्वविज्जयी९८

॥उद्भवः॥ दूरहोगयाहै जन्म जिसका सर्वकारणहोनेसे १॥७९० नाम॥ सुन्दरः ॥ सोहना जन्म है जिसका अपनी इच्छासे १॥सुंदः ॥ सुंदनाम कोमलहै स्वभाव जिसका१॥रत्ननाभः ॥रत्नकी नांई चमकती है नाभि जिसकी१॥सुलोचनः॥उत्तम हैं ज्ञानके नेत्र जिसके१ अर्कः॥ब्रह्मादिकके परमपूज्य१॥वाजसनः॥वाज नाम अन्नसनःनाम दाता अन्नके दाता१॥शृंगी॥प्रलयमें म-त्स्यरूप होके अपने शृंगमें नाव बांधी जिसने१॥जयं-तः॥वैरियोंको अच्छी तरह जीतनेवाले१जयदाता२॥ सर्व विज्जयी॥सबको जानै सो सर्ववित्१सर्ववित्भीहै

जयीभी है भीतरके शत्रु रागादिक बाहरके शत्रु हिरण्य कश्यपआदिकके जीतनेका स्वभाव है जिसका १ ॥९८

सुवर्णबिंदुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः ॥ महाह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः ॥ ९९ ॥

॥सुवर्णबिंदुः॥ बिंदु नाम अवयव तथा अंग जिसके सुवर्णकी नाईं चमकें १ वर्ण नाम अक्षर सुंदर अक्षर और बिंदु हैं जिस मंत्रमें मंत्ररूप २ ॥८००नाम॥ अक्षोभ्यः॥ विषयादिक और विकारादिकसे जो क्षुब्ध न होय क्षोभनामघबराना १॥सर्ववागीश्वरेश्वरः॥ब्रह्मा बृहस्पति आदिक जो वाणीके ईश्वर हैं उनकाभी ईश्वर १॥ महाह्रदः॥ जिस आनंदरूपी ह्रदनाम तालाबमें स्नान करके योगी लोग सुखसे वास करें १॥ महागर्तः॥ गढे की तरह जिसकी मायाका बहुत दुःखसेभी पार न मिलै२ "मम माया दुरत्यया" यह गीतामें है॥ गर्त नाम रथ जिसका बड़ा रथ प्रमाण महाभारतसे२॥ महाभूतः॥ तीन कालमेंपरिपूर्ण स्वरूप १ ॥ महानिधिः॥ सब भूत जिसमें रहैं सो महानिधि १ ॥ ९९ ॥

कुमुदः कुंदरः कुन्दः पर्जन्यःपावनोऽनिलः॥ अमृताशोऽमृतवपुः सर्वज्ञःसर्वतोमुखः १००॥

॥कुमुदः॥कु नाम पृथ्वी मुद नाम हर्षदाता अवतारा-
दिक धारके पृथ्वी को आनंददाता १॥कुन्दरः॥ कुंदके
फूलसे उजले धर्मोंके फलदाता १ पृथ्वीके धारनेवाले
हिरण्याक्षके घातक वराहरूप२कुंदः॥ कुंदके रंग निर्म-
ल सत्वप्रधान अंगवाले१कुंद नाम यम२कु पृथ्वीकेरा-
जोंको मारनेवाले परशुरामजी३कु नाम पृथ्वीको अश्व
मेध करके परशुरामजी रूपसे कश्यपको दानकरदी ४
॥ पर्जन्यः॥मेघकी तरह तीनों तापके मिटानेवाले१
सब कामनाके मेघ नाम बरसनेवाले २॥८१० नाम॥
पावनः॥ स्मरणहीसे पवित्र करतेहैं१॥ अनिलः॥जि-
सको कोई इल नाम प्रेरक नहीं १ इल नाम नींदसे
रहित सदा जाग्रत २॥ अमृताशः॥ आत्मारूपी अ-
मृत भोजनहै जिसका१अमृत नाम अविनाशी फलदा-
यक है आत्मा जिसका २ समुद्र मथ आपभी अमृत
पिया देवतोंको भी दिया३॥अमृतवपुः॥जिसको मौत
नहीं १॥ सर्वज्ञः॥ सब वस्तुका ज्ञाता१सर्वज्ञ सर्ववित
हैं यह श्रुति है ॥ सर्वतोमुखः ॥ सब तरफ मुँह है जि-
सका१॥सबतरफ आंख शिर मुँह है यह गीताहै॥ १००

सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ॥

न्यग्रोधोदंबरोश्वत्थश्चाणूरांध्रनिषूदनः १०१

॥सुलभः॥ भक्तोंसे पत्रपुष्प लेकर जलदी प्राप्त होय १ ॥सुव्रतः॥ सुंदर शोभित है व्रत नाम नेम जिसका १॥ सिद्धः॥ आपसे आप जिसको सब सिद्धि प्राप्तहैं॥शत्रुजित्॥ जो देवतोंके वैरी सोई नारायणके वैरी हैं उनके जीतनेवाले ८२० नाम॥शत्रुतापनः॥ देवतोंकेशत्रुको जलानेवाले १॥ न्यग्रोधः॥ सबसे ऊंचे १ सबभूतोंको मायामें लपेटनेवाले २॥उदंबरः॥ अंबर नाम आकाश सबभूतोंका कारण भूतसे जो उत्पन्न होय १ ऊर्ग अन्नरूप आत्मासे विश्वको पालन करै २ ॥ ऊर्ग नाम अन्नसे जिसने जिलाया यह श्रुति है ॥ अश्वत्थः श्व नाम कल्ह जो कल्ह नाम दूसरे दिनतक न रहै १ अश्वत्थकी तरह जो स्थित रहै २ ऊपर जड नीचे डाली है जिसकी ऐसा अश्वत्थ सनातन है यह श्रुति है और गीतामें है ॥ चाणूरांध्रनिषूदनः॥ चाणूर नाम दैत्य आंध्रजातका अथवा अंध्र नाम देशका वासी सो आंध्र उसके घातक १ चाणूरके शरीरके नाशक २ ॥ १०१ ॥

सहस्रार्चिःसप्तजिह्वःसप्तैधाः सप्तवाहनः ॥

अमूर्तिरनघोऽचिंत्योभयकृद्भयनाशनः१०२

॥सहस्रार्चिः॥अनंद किरणवाले१॥ गीतामें कहा है कि जो हजार सूर्य आकाशमें एक बार उदय होयँ तो भी उस महात्माकी किंचित् सादृश्य होय ॥ सप्तजिह्वः ॥ अग्निरूप सात जिह्वावाले १ काली १ कराली २ मनोजवा ३ सुधूम्रवर्णा ४ सुलोहिता ५ स्फुलिंगिनी ६ विश्वरुचिः ७ सप्तैधाः ॥ सात एधस् नाम दीप्तिवाले१॥सप्तवाहनः ॥ सात घोडोंपर चढ़नेवाले १ एकवाहनः घोड़ा नामवाला एक घोडा है सात नामवाला है ये श्रुति है ॥ गायत्री १ बृहती२ उष्णिक् ३ जगती ४ त्रिष्टुप् ५ अनुष्टुप् ६ पंक्ति ७ सात घोडोंके रूप होकर छंदनाम वेद जिसको उठावे वह विष्णुपुराणमें मत्स्यपुराणमें है ॥ अमूर्तिः ॥ चराचररूप जो भोज्यहै सो जिसको नहीं जो कुछ खाता नहीं और प्रकाशमानहै १ पंच-भूतमेंसे आदमियोंका भोजन अन्न और जानवरोंका भोजन जानवर यह सब नहीं है जिसको यह श्रुति है मूर्तिनाम देह जिसको नहीं२॥८३०नाम ॥अनघ पाप और दुःखसे रहित १ ॥ अचिंत्यः ॥ सबक

साक्षी पालनहार १ सबप्रमाणसे बाहर जिसको चिंतन न करसकै २ सब प्रपंचसे न्यारा ३ जिसको यहहै ऐसाहै नहीं कहसक्ते ४ ॥ भयकृत् ॥ असतमार्गवालोंको भयदाता १ भक्तोंका भय काटनेवाले २ ॥ भयनाशनः ॥ अपने अपने वर्णाश्रमके धर्मवालोंको परमपुरुष विष्णुके आराधनाके सिवाय दूसरीराह नहीं है यह विष्णुपुराणमें है ॥ १०२ ॥

अणुर्बृहत्कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणोमहान् ॥
अधृतःस्वधृतःस्वास्यः प्राग्वंशोवंशवर्द्धनः॥

अणुः॥परमसूक्ष्म १ ब्रह्म अणुहै यहश्रुतिहै॥ बृहत्॥ बढनेवाले बढावनेवाले १ बडोंसे बडा है यह श्रुतिहै॥ कृशः॥२॥स्थूलतानाममोटाईरहित १॥ स्थूलःसर्वरूप हैइसवास्तेमोटा १॥गुणभृत्॥सत्त्व,रज,तम,तीनोंगुणों का और उत्पत्ति स्थिति लय तीनों क्रियाओंके अधिष्ठान १॥निर्गुणः॥गुणसे रहितएककैवल्यहैनिर्गुणहैयह श्रुति है॥८४०नाम॥महान्॥ गुणोंसे रहितसूक्ष्मतर १ नित्य शुद्ध बुद्ध सर्वगत जिसको यह है इतना है यह न जानसके २ जिसके शब्द नहीं स्पर्श नहीं३॥अधृतः॥ जो किसीसे उठाया न जाय पृथ्वीके बोझ

उठानेवाले शेषनागादिका भी बोझ उठानेवाले १ ॥ स्वधृतः॥अपनी आत्माको आपही उठानेवाला१वह भगवान् किसीमें प्रतिष्ठित है अपनी ही महिमामें प्रतिष्ठित है यह श्रुतिहै ॥ स्वास्यः ॥कमलकीसी शोभा है जिसके मुखकी १ वेदरूपी शब्द जिसके मुखसे पुरुषार्थके उपदेशके वास्ते निकालाहै२परमात्माकेसब वे श्वास हैं ॥ यह श्रुति है॥ प्राग्वंशःसब वंशवालोंका वंश है नाम सबसे पहिले है पीछेसे प्रपंच रूपी वंश जिसका हुआ ॥ वंशवर्द्धनः॥वंशनाम संसाररूपी वंश प्रपंचका बढावनेवाला१प्रपंचके काटनेवाले२॥१०३

भारभृत्कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः॥
आश्रमः श्रवणः क्षामः सुपर्णोवायुवाहनः ॥

॥भारभृत्॥ शेषनाग कूर्मबराहादिक धारणकर भूमिभारको धारनेवाले १ ॥ कथितः ॥ वेदोंने देवतोंने जिसको परमात्मा कहाहै १ सब वेद जिसकी मर्यादा मानतेहैं सब भूतोंका परमात्मा वेदोंने कहाहै २ सब वेद जिसके पदका मनन करै सब वेदोंमें मैंही जनने योग्यहूँ यह गीताहै ४ वेदमें पुराणमें भारतमें रामायणमें विष्णुको सब जगह गायाहै॥योगी॥योग

नाम ज्ञानसे जो मिलै योगसमाधिसे अपनी आत्मा की सदा धारनेवाले ॥ योगीशः ॥ योगियोंका भेद दूर करनेवाले आप अभेद १ सब योगियोंके ईश्वर २॥८५० नाम ॥ सर्वकामदः॥ सबकामनाके दाता१ जिससे फल उत्पन्न होते हैं यह व्यासने कहाहै ॥ आश्रमः॥ सब संसारका घर१ संसाररूप वनमें भटकते हुए लोगोंका विश्रामस्थान२॥श्रमणः॥मूर्खोंको संताप नाम दुःख देनेवाले १॥क्षामः ॥ सब भूतोंको छिन्न करनेवाले १ ॥ सुपर्णः ॥ वेदरूपी अच्छे पंखवाले ॥ १ वेद जिसके पत्ते हैं यह गीतामें है॥वायुवाहनः ॥ जिसके डरसे हवा चलती है ॥ १०४ ॥

धनुर्धरो धनुर्वेदो दंडो दमयिता दमः॥अपराजितः सर्वसहो नियंताऽनियमोयमः१०५॥

॥ धनुर्धरः ॥ श्रीरामरूपसे धनुषधारी १॥ धनुर्वेदः॥रामचंद्ररूपसे धनुर्विद्याका जाननेवाला १ ॥ दंडः ॥दंडरूप होकर दमनकर्ता १ दमयिता ॥ धर्मराजरूप और मनु और राजारूपसे प्रजाके दमन करनेवाले १दंडऔर दमयिता मैं हूँ यह गीताहै॥८६०नाम दमः॥दंड और दंडका कार्यरूप और दंडरूप भी है॥

॥अपराजितः॥शत्रुवोंसे जीता न जाय१॥सर्वसहः॥ सब कामोंमें सामर्थ्य वाले १ सब वैरियोंको अनादर करनेवाले२पृथ्वीरूपसे सबके उठानेवाले३॥नियंता॥ सबको अपने अपने कामोंमें लगानेवाले ॥ अनियमः॥ जिसका कोई काममें लगानेवाला नहीं१सब कामप्रेरक नाम हाकिम है उसका कोई प्रेरक नहीं॥ अयमः ॥ यमनाम मृत्यु जिसको नहीं१ यम नियम योगके अंग हैं उनके करनेसे जो मिले आपही यम है आपही नियम हैं क्योंकि यम नियम करनेसे आत्मा मिलता है ॥ १०६ ॥

सत्त्ववान्सात्त्विकःसत्यःसत्यधर्मपरायणः।
अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हः प्रियकृत्प्रीतिवर्धनः॥

॥सत्त्ववान्॥ शूरता वीरता सत्त्व नाम पराक्रम है जिसका १॥ सात्त्विकः ॥ सत्त्वगुणमें प्रधान करके स्थित १ ॥ सत्यः ॥ सत्पुरुषोंमें भली भांति जो वासकरै १॥सत्यधर्मपरायणः ॥ सच बोलनेमें और धर्मनाम वेदकी आज्ञामें परायण नाम लगे हुये॥१॥ ८७०नाम ॥ अभिप्रायः ॥ पुरुषार्थीलोकजिससे मुक्तिकी प्रार्थना करैं१अथवा जिसमें जगत् लय होय२

॥प्रियार्हः॥प्रिय नाम प्यारी वस्तु उस्के योग्य॥अर्हः अर्ह नाम आसन प्रशंसा अर्घ पूजा स्तुति नमस्कार ध्यान इन साधनोंके योग्य॥प्रियकृत्॥ स्तुति करने वाले भक्तोंकी कामना पूरीकरैं १ ॥ प्रीतिवर्द्धनः॥ भक्तोंकी प्रीति बढानेवाले ॥ १०६ ॥

विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग्विभुः॥
रविर्विरोचनःसूर्यःसविता रविलोचनः १०७

॥विहायसगतिः॥विहायस नाम आकाशमें है गति जिसकी१लोकमें जो जो प्यारी वस्तु है उसके बढने-की इच्छासे गुणवान् श्रोत्रिय ब्रह्मनिष्ठ अथवा सर्वज्ञ आत्माके अर्पण करनेलायक२विष्णुके चरण वा सूर्य ३॥ज्योतिः॥आप प्रकाशरूप १ नारायण परमज्यो-ति है यह श्रुति है ॥ सुरुचिः॥ सुन्दरप्रकाश अथवा उत्तम इच्छा वाले १ ॥ हुतभुक् ॥ देवतोंके नामकी जो आहुति है उसके खानेवाले १ ॥ विभुः॥ व्यापक तीनलोकके प्रभु१॥८८०नाम॥रविः॥ रसके लेनेवाले सूर्यरूप१॥विरोचनः॥नानारूपसे सूर्य चांद ग्रहरूपसे प्रकाश करने वाले ॥ सूर्यः ॥ सबके उत्पत्ति करन-हार १ सब जगत्को काममें लगानेवाले २॥ सवि-

ता ॥ सब जगत्के दाता १ सब जगत्के रचनेवाले २ सब रसोंके दाता ॥ रविलोचनः ॥ सूर्यहै आंख जिसकी १ अग्नि माथा है सूर्य चांद आंखहैं यह श्रुतिहै १०७

अनंतो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोग्रजः ॥
अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः ॥

॥अनंतः॥ नित्य सब देश सब काल सब वस्तु रूपव्यापक किसी देश किसी कालकिसी वस्तुमें जिसका नियम न होसके १ शेषनागरूप २॥ हुतभुक् ॥ यज्ञको भोगनेवाला १॥भोक्ता॥भोग नाम मायाके भोग करनेवाले १जगत्के पालनेवाले २॥सुखदः॥ भक्तोंको मुक्तिरूप सुख देनेवाले १दुःखको काटनेवाले२॥नैकजः॥धर्मकी रक्षाके वास्ते वारंवार जन्म लेनेवाले१॥ ८९० नाम॥अग्रजः॥ सबसे पहले जन्म धारनेवाले १ अग्रज नाम हिरण्यगर्भ२हिरण्यगर्भसबके पहिले हुआ यह श्रुति है॥अनिर्विण्णः॥सबकाम प्राप्त होनेसे वैराग्य रहित१सदामर्षी ॥ सत्कर्म करनेवालोंको सहनेवाले १॥ लोकाधिष्ठानम् ॥ सब जगत्को धारणकरै नाम जगत् जिसमें रहै १ जिसमें तीन लोक वसैं ऐसा ब्रह्म है २॥ अद्भुतः ॥ आश्चर्यरूप शक्ति जिसकी १ कोई

आश्चर्यकी तरह देखताहै कोई अचरजकी नाईं कहता है कोई अचरजकी तरह सुनताहै यह गीतामें है ॥ १०८

सनात्सनातनतमः कपिलः कपिरव्ययः ॥ स्वस्तिदः स्वस्तिकृत्स्वस्ति स्वस्तिभुक्स्वस्तिदक्षिणः ॥ १०९ ॥

॥सनात्॥सबका कालरूप कल्पोंसे श्रेष्ठ १ ब्रह्मका रूप, बहुकाल रहनेवाला सनातनहै यह विष्णु पुराणमेंहै, सनातनतमः॥सबका कारण ब्रह्मादिकसे भी पुराना १॥कपिलः॥वडवाग्निरूपकपिलवर्ण १क नामजल पि नाम पीनेवाला अपनी किरणोंसे सूर्यरूप२॥ कपिः नाम वराहजी॥अव्ययः॥ प्रलयकालमें जगत् जिसमें लय होय१।९००नाम॥स्वस्तिदः॥भक्तोंको कल्याण दायक १ स्वस्तिकृत ॥ कल्याण करनेवाले १ ॥ ॥स्वस्ति॥मंगलरूप परमानंदलक्षण१॥ स्वस्तिभुक्॥ कल्याणके भोगनेवाले १ भक्तोंको कल्याणका भोग करावनेवाला १ स्वस्तिदक्षिणः ॥ कल्याणरूप होकर बढ़नेवाले १ कल्याणकरनेमें समर्थ२ कृष्णके स्मरणसे सब सिद्धि प्राप्त होतीहैं यह स्मृति है ॥१०९॥

अरौद्रःकुंडली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः॥

शब्दातिगःशब्दसहःशिशिरःशर्वरीकरः १०

॥ अरौद्रः ॥ कर्मरौद्र रागरौद्र कोपरौद्रसे रहित नाम दुःखदायी काम दुःखदायी राग नाम प्रीति और बहुत दुःखदायी कोप जिसमें नहीं १ सर्वकाम प्राप्त होनेसे रागद्वेषसे रहित २ ॥ कुंडली ॥ शेषरूप ॥ सहस्रांशु सूर्यमंडलरूपी कुंडल है जिसका२ सांख्ययोगरूपी कुंडल धारनेवाला ३॥ चक्री॥ लोगोंकी रक्षाके वास्ते मनरूप सुदर्शनचक्र धारनेवाले १ बलरूप धारनेवाले ३ बड़ेवेगसे वायुको मनरूपी चक्रमें छीननेवाले२॥विक्रमी॥चरणोंका धरना अथवा शूरता विलक्षणहै जिसकी १ ऊर्जितशासनः ॥ ऊर्जित नाम बढ़ी है शासन नाम आज्ञा जिसकी १ श्रुति स्मृति हमारी आज्ञा हैं उनको न माने सो हमारा शत्रुहै यह भगवद्वचन है॥९१०नाम॥शब्दातिगः॥ वाणी जिसके कहनेमें मनसहित जिसके विचारमें फेर आतीहै१शब्द नाम वेदसे जाना जाय यह श्रुतिहै सब वेदोंसे मैं ही जाननेयोग्य हौं यह गीता है॥ शब्दसहः॥सारे वेद व्यंग्यसे जिसको कहैं सब वेद जिसकी आज्ञा मानैं वेदोंमें सामवेद मैं हूं यह गीतामें है १॥

॥शिशिरः॥तीनों तापसे भूलसे हुवोंको ढक देनेवाले शिशिररूप१॥शर्वरीकरः॥ ज्ञानियोंको मुक्तिदाता१ संसारी लोगोंको रात करनेवाले ॥ ११० ॥

अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणांवरः॥ विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः१११

॥ अक्रूरः ॥ सब कामके प्राप्तहोनेसे क्रोधरहित॥ ॥ पेशलः ॥ जिसका शरीर कर्म मन वाणी शोभावान है १ ॥ दक्षः ॥ बड़ेसे बहुत बड़ा परम समर्थ और बहुत जल्दीरूप ॥ दक्षिणः ॥ दक्षिण शब्दकाभी दक्ष अर्थ है १ ॥ क्षमिणांवरः ॥ क्षमाकरनेवाले योगी १ अथवा पृथ्वी इनसे श्रेष्ठ पृथ्वीकी तरह क्षमावाला है, यह वाल्मीकिका वाक्यहै॥क्षमा जो शक्ति सबशक्तिवानोंमें श्रेष्ठ ॥विद्वत्तमः॥ सदा पूर्णज्ञानवाले१ ९२० नाम ॥ वीतभयः ॥ दूर होगया है संसार रूपीभय जिसका१संसारके भयसे रहित २ सबका ईश्वर नित्य मुक्त॥पुण्यश्रवणकीर्तनः॥ श्रवण और कीर्तन जिसके गुण और यशको पवित्र करता है १ जिसका श्रवण कीर्तन करनेसे दोनों लोकमें अशुभ नहीं होता यह व्यासका वचनहै २ ॥ १११ ॥

उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्योदुःस्वप्ननाशनः॥
वीरहा रक्षणः संतो जीवनःपर्यवस्थितः ११२

॥ उत्तारणः ॥ संसारसागरसे पार उतारनेवाला १ ॥दुष्कृतिहा ॥दुष्कृति नाम पापसमूहको दूर करनेवाले १ पापीजनोंको मारनेवाले२॥पुण्यः॥सब स्मरणादिक करनेवालोंकोपवित्रकरै श्रुति स्मृतिआदिक वचनोंसे उपदेश करनेवाले२ इतिहास पुराणश्रवणकरनेवालोंको पवित्र कर्ता३॥ दुःस्वप्ननाशनः॥ध्यान पूजा स्तुति करनेसे खोटे स्वप्न नाशकरनेवाले१ ॥ वीरहा॥सब दुःखोंकोदूरकरकेमुक्तिदाता १॥रक्षणः॥ सत्त्वगुणसे तीन लोककी रक्षा करनेवाले॥सन्तःसंतरूप होकर विद्या और विनयको बढ़ावनेवाले१उत्तम मार्गमें चलैं सो संत॥ जीवनः॥ प्राणरूप होकरजगत्को जिलावनेवाले १॥ ९३०॥नाम पर्यवस्थितः॥ संपूर्ण विश्वमें व्याप्त होके रहनेवाले १ ॥ ११२ ॥

अनंतरूपोऽनंतश्रीर्जितमन्युर्भयापहः ॥ चतुरस्रोगभीरात्माविदिशोव्यादिशोदिशः ॥

॥ अंनतरूपः ॥ अनंतरूप होकर अथवा जगत्रूप होके रहै१॥ अनंतश्रीः॥अप्रमाण शक्तिवाले१उसकी

परमशक्ति नाना हैं श्रुति हैं ॥ जितमन्युः ॥ मन्यु नाम क्रोधको जीतनेवाले ॥ भयापहः ॥ संसारका भय नाश करनेवाले १ संसाररूपी भयके नाशक २॥ चतुरस्रः न्याययुक्तको चतुरस्र कहतेहैं पुरुषोंको कर्मके अनुसार चार फल देनेवाले १ ॥ गभीरात्मा २ ॥ गभीर नाम अथाह आत्मा स्वरूप १ अप्रमाण आत्मा ॥ विदिशः ॥ नाना प्रकारके फल अधिकारियोंको देनेवाले १ व्यादिशः ॥ इंद्रादिकको आज्ञा देनेवाले १ इंद्रादिककी आज्ञा करनेवाले २॥ दिशः ॥ वेदरूप होके कर्मोंके फल बतावनेवाले १ ॥ ९४० नाम ॥ ११३ ॥

अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीःसुवीरो रुचिरांगदः ॥
जननोजनजन्मादिर्भीमोभीमपराक्रमः ११४

॥ अनादिः ॥ आदि नाम कारणरहित १ ॥ भूर्भुवः ॥ जगत्‌की आधार पृथ्वी इसके भी आधार १ ॥ भूनाम पृथ्वीकी लक्ष्मी नाम शोभा भुवो लक्ष्मीः एकनामहै १ भूलोक भुवर्लोक और लक्ष्मी नाम आत्मविद्या यह तीनरूपहै जिसका २ ॥ लक्ष्मीः ॥ आत्मविद्या १ चंद्र सूर्य अग्नि रूपसे लक्ष्मी नाम शोभित २ सुवीरः ॥ ईर नाम गति सुंदरहै जिसकी १ श्रवणमनन

निदिध्यासनादिक सुंदर हैं ज्ञानके साधन जिसके २ सुंदरहै गति मच्छ कच्छ आदिक रूपमें पृथ्वीके हितके वास्ते जिसकी ३ ॥ रुचिरांगदः॥ सुंदर बाहुभूषणवाला १॥ जननः॥ जीवोंका पैदा करनहार १ ॥ जनजन्मादिः॥जीवोंके जन्मकामूलकारण१॥भीमः॥ सबको भयदाता १॥ भीमपराक्रमः॥ असुरोंके भयदायकहै पराक्रम जिसका ॥ ११४ ॥

आधरनिलयो धाता पुष्पहासः प्रजागरः ॥ ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः ॥

॥ आधारनिलयः ॥ पृथिव्यादिक पंचभूत जो जगत्के आधारहैं उनकाभी आधार ॥ ९६० नाम ॥ अधाता ॥ जिसके स्वरूपका कोई पैदा करनेवाला नहीं है आपसे आपही स्थित प्रलयमें सबको धारनेवाला इस पक्षमें धाता नाम है॥ १॥पुष्पहासः॥ खिलेहुये फूलकी तरह जगत्को प्रकाश करनेवाले१यह जगत् भगवान्की फुलवारीहै२॥प्रजागरः ॥ सदाबुद्धिरूप है इसीवास्ते सदा जाननेवालाहै ॥ ऊर्ध्वगः ॥ सबसे ऊंचा १ ॥ ॥सत्पथाचारः॥सत्पुरुषोंके कर्म अच्छी राहसे आचरण करनेवाले १ सज्जनोंको भले मार्गमें चलावै २

वेदमार्ग आचार है जिसका ३ ॥ प्राणदः ॥ प्राण देनेवाले १ परीक्षितादिक मरेहुवोंको जिलावनेवाले२ ॥ प्रणवः॥ ॐकारवान् परमात्मा १॥पणः॥ व्यवहारमें प्रतिज्ञा पूरणकरनेवाले १अधिकारियोंके पुण्यलेकर उसके बदलेमें फलदेनेवाले२पण नाम चित्त वह मोक्षकालमें अथवा सुषुप्तिकालमें जिसमें लय होय११९

प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत्प्राणजीवनः ॥
तत्त्वं तत्त्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः ॥

॥ प्रमाणम् ॥ प्रमाज्ञानस्वरूप १ स्वयंप्रकाश २ प्रमा ब्रह्मविद्या यह श्रुति है अनंतज्ञानस्वरूप भ्रांतिसे जीवरूप होगया यह विष्णुपुराणमें है २ ॥ प्राणनिलयः॥प्राण इंद्रिय जिसमें लय होय ऐसा जीवरूप१ प्राणअपनादिकहीसे मनुष्य नहीं जीता किंतु जिसके आश्रय प्राणहैं उससे जीताहै२॥९६०नाम॥प्राणभृत्॥ अन्नरूप होके प्राणका पालक १ ॥ प्राणजीवनः ॥ प्राण नाम वायुसे मनुष्योंको जिलावनेवाले १तत्त्वम्॥ तत् सत् अमृत यह ब्रह्मके नाम हैं ॥तत्त्ववित्॥तत्त्वके स्वरूपको यथार्थ जाननेवाले ॥ एकात्मा ॥ आपही एक आत्मारूपहैं और कुछ नहीं है १ एक है सब

पहिले होनेवाला यह श्रुति है ॥जन्ममृत्युजरातिगः॥ जन्मसे आदि लेकर षट्‌विकारोंका उलांघनेवाला १ न जन्मता है न मरता है न यह था न है न होगा॥अज है नित्य है शाश्वतहै पुराण है यह गीता है ॥ ११६॥

भूर्भुवःस्वस्तरुस्तारः सपिता प्रपितामहः ॥ यज्ञो यज्ञपतिर्यज्वा यज्ञांगो यज्ञवाहनः११७

॥ भूर्भुवःस्वस्तरुः ॥ तीनों लोकरूप वृक्षकेरूप १ भूर्भुवः स्वः इन व्याहृतिसे जगतको तारनेवाला २ यज्ञसे मेघ वर्षताहै मेघसे अन्न होताहै अन्नसे प्राणी यह मनु कहते हैं और गीतामें भी है २ ॥ तारः ॥ संसारसागरसे तारनेवाले १ तार नाम प्रणव काभी है ॥ सपिता ॥ लोकोंका पिता॥प्रपितामहः॥ब्रह्माकाभी पिता१॥९७० नाम ॥यज्ञः॥यज्ञरूप यज्ञमें जानेवाले २ ॥ यज्ञपतिः ॥यज्ञके रक्षक अथवा स्वामी १ सब यज्ञोंके प्रभु और भोक्ता मैं हूँ यह गीता है॥यज्वा॥ यजमानरूप १ ॥यज्ञांगः॥ यज्ञहै अंग जिसके ऐसी वराहमूर्ति वेद जिसके परे हैं डाढ जिसकी स्तंभ है क्रतु हाथहैं चित्ती नाम अग्निका स्थान मुखहै अग्नि जीभहै कुशा रोमहैं रात दिन आंख हैं

वेदके मंत्र अंगभूषण घृत नाक है स्रुवा थुथुन है सत्य और धर्म शब्द है ब्रह्म नाम ब्रह्मा अथवा ब्राह्मण अर्थात् शिरहै महापिता ऐसी वराहमूर्ति।यज्ञवाहनः॥ यज्ञोंका प्रदाता ॥ ११७ ॥

यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी यज्ञभुग्यज्ञसाधनः ॥
यज्ञांतकृद्यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च ॥ ११८॥

॥यज्ञभृत् ॥ यज्ञोंका रक्षक१ ॥ यज्ञकृत् ॥ जगत के आदिमें यज्ञ करनेवाले १ जगत्के अंतमें यज्ञ काट- नेवाले २॥यज्ञी॥ यज्ञकरनेवालोंमें प्रधान१॥यज्ञभुक् ॥ यज्ञका भोक्ता ॥ १ ॥यज्ञसाधनः॥यज्ञका मानअर्पी स्रुवा चपाल हारि इत्यादिकअंगः१॥९८०नाम॥यज्ञांत कृत्॥यज्ञकाअंत नाम फल जो दे१॥यज्ञगुह्यम्॥यज्ञोंमें सिद्धांतज्ञानयज्ञ १ ॥ अन्नम् ॥ आहाररूप १ जो खा- या जाय अथवा जो सबको खाय उसको अन्नकहतेहैं यहश्रुति है॥अन्नादः॥अन्नखानेवाले ॥ एव च॥ ११८॥

आत्मयोनिःस्वयंजातोवैखानःसामगायनः॥
देवकीनंदनःस्रष्टा क्षितीशःपापनाशनः ११९

आत्मयोनिः॥आत्महीसे उत्पन्न॥स्वयंजातः॥स्वयमे-

व नाम स्वतः होनेवाला॥ वैखानः ॥ बहुतखोदनेवाले १ पृथ्वी खोदके पातालमें रहनेवाले वराहरूपहोके हिरण्याक्षको मारनेवाले २॥सामगायनः॥सामवेदके गावनेवाले १॥सामवेद जिसकोगावै२॥ देवकीनंदन॥ देवकीके बेटा जिसकी आज्ञा सब वेदसब देवता सब लोकपाल तीनों अग्नि मानते हैं वही देवकीनंदन है यह महाभारतहै ॥ स्रष्टा ॥ सब सृष्टिका रचनेवाला ९९०नाम॥क्षितीशः ॥ पृथ्वीकेप्रभू रामचन्द्ररूप १॥ पापनाशनः ॥पूजनभजनकरनेसे पापनाश करनेवाले पक्षभरके उपवाससे पुरुषका पाप जितना नाशहोताहै उतना ही १००प्राणायामसे जाताहै जितना १००० हजारप्राणायामसे नाश होताहै उतना विष्णुके एक क्षण ध्यान करनेसे यह वृद्ध शाता तपका वचनहै ११९॥

शंखभृन्नंदकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः ॥
रथांगपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः १२०॥

॥शंखभृत्॥भूतोंका अदि जो अहंकार सोई पांचजन्य शंखके धारनेवाले १ ॥ नंदकी ॥ विद्यारूप नंदक नाम तलवारहै जिसकी १ ॥ चक्री ॥ मन रूप

सुदर्शन नाम चक्रके धारनेवाले १ ॥ शार्ङ्गधन्वा ॥ इंद्रियरूप जिसका शार्ङ्ग नाम धनुष है १ ॥ गदाधरः॥ बुद्धिरूपी कौमोदकी नाम गदा है जिसकी॥ रथांगपणिः॥रथका पहिया जिसके हाथमें होय१यह कथा महाभारतमें है ॥ अक्षोभ्यः॥जिसको कुछ भी क्रोध वा भय वा घबराहट न होय१॥ सर्वप्रहरणायुधः ॥ जितने हथियार ऊपर कहे हैं उनके सिवाय और जितनी मारनेकी वस्तुहैं वह सब उसीके हथियार हैं॥ १००० नाम ॥ १२० ॥

सर्वप्रहरणायुध ॐ नम इति ॥ ॥
इतीदं कीर्तनीयस्य केशवस्य महात्मनः ॥ नाम्नां सहस्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्तितम् ॥ १ ॥

ॐनमः॥नमस्कारवास्ते पूजाके ॥ सर्वप्रहरणायुध दोबार कहनेसे समाप्तिका सूचन होता है१॥अथ फलश्रुतिः॥इतीदं ॥ इतिशब्दसे हजारनामकी पूरी गिनती यह कीर्तनकरनेके योग्य केशवमहात्माके हजारनाम जो प्रकाशमानहैं तिनको संपूर्ण भलीभांति कहेहैं१॥

य इदं शृणुयान्नित्यं यश्चापिपरिकीर्तयेत् ॥
नाशुभंप्राप्नुयात्किञ्चित्सोऽमुत्रेह च मानवः २

जो इसको नित्य सुनै और कीर्तन करै किसी तरहके अशुभ उसको इस लोकमें और परलोकमें नहीं होते

वेदांतगोब्राह्मणःस्यात्क्षत्रियोविजयीभवेत् ॥
वैश्यो धनसमृद्धःस्याच्छूद्रःसुखमवाप्नुयात् ॥

ब्राह्मण वेदांतका जाननेवाला होय क्षत्रिय लड़ाईमें जीत पावै वैश्यका धन बढै शूद्र सुख पावै॥३॥

धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थीचार्थमाप्नुयात् ॥ कामानवाप्नुयात्कामी
प्रजार्थी प्राप्नुयात्प्रजाः ॥ ४ ॥

धर्म चाहनेवाला धर्म पावै अर्थ चाहनेवाला अर्थ पावै काम चाहनेवाला काम पावै प्रजा चाहनेवाला औलाद पावै ॥ ४ ॥

भक्तिमान्यः सदोत्थाय शुचिस्तद्गतमानसः।
सहस्रं वासुदेवस्य नाम्नामेतत्प्रकीर्तयेत्॥५॥

भक्तिसे जो सदा उठकर पवित्र होकर दिल लगाके वासुदेवके सहस्रनामका पाठ करै ॥ ६ ॥

यशः प्राप्नोति विपुलं ज्ञातिप्राधान्यमेव च॥ अचलांश्रियमाप्नोतिश्रेयःप्राप्नोत्यनुत्तमम्॥६

उसको बहुत यश मिलै जातिमें प्रधानता मिलै अचल लक्ष्मी मिलै सबसे उत्तम कल्याण नाम मुक्ति मिलै।

न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विंदति॥ भवत्यरोगो द्युतिमान्बलरूपगुणान्वितः॥७॥

कुछ डर न लगै बड़ा पराक्रम होवे रोग जाय प्रकाशवान् होय बलरूपगुणसे भरा रहै ॥ ७ ॥

रोगार्तो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बंधनात्॥ भयान्मुच्येत भीतस्तु मुच्येतापन्न आपदः॥८

रोगी रोगसे छूटजाय और कैदी कैदसे छूटजाय आपदावाला आपत्से छूटै ॥ ८ ॥

दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमम्॥स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः ॥ ९॥

बडे दुःखोंसे जल्दी पार होजाय पुरुषोंमें उत्तम पुरुष को नित्य भक्तिसे सहस्रनाम पढके स्तुति करै ॥९॥

वासुदेवाश्रयो मर्त्यो वासुदेवपरायणः॥ सर्व पापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम् ॥१०॥

वासुदेवके आसरेवाला आदमी वासुदेवकी पूजा सेवा स्मरणमें लगा हुआ सब पापोंसे मन शुद्ध-करके सनातनब्रह्मको पावताहै ॥ १० ॥

न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित्॥ ज-न्ममृत्युजराव्याधिभयं नैवोपजायते ॥११॥

वासुदेवके भक्तोंको कभी अशुभ नहीं है जन्म लेना मरना बूढा होना बीमारी यह उसको नहीं होता ११॥

इमं स्तवमधीयानःश्रद्धाभक्तिसमन्वितः॥यु-ज्येतात्मासुखक्षांतिश्रीधृतिस्मृतिकीर्तिभि॥

इस स्तोत्रको जो श्रद्धा भक्तिसे पाठ करताहै वह आत्मा सुख क्षांति लक्ष्मी धृति स्मृति कीर्तिसे युक्त होता है ॥ १२ ॥

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभामतिः
भवंति कृतपुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे ॥ १३

जो पुरुषोत्तमके भक्त कृतपुण्य लोगहैं उनको क्रोध और मत्सरता और लोभ अशुभमति नहीं होती॥ १३॥

द्यौः सचंद्रार्कनक्षत्रा खं दिशो भूर्महोदधिः ॥
वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानि महात्मनः १४

स्वर्ग चंद्रमा सूर्य नक्षत्रोंसमेत आकाश दिशा पृथ्वी समुद्र वासुदेवके पराक्रमसे सब धारण करते हैं॥ १४॥

ससुरासुरगंधर्वं सयक्षोरगराक्षसम् ॥ जगद्वशेवर्ततेदं कृष्णस्य सचराचरम् ॥ १५ ॥

देवता असुर गंधर्व यक्ष राक्षस समस्त यह जगत् सब चर अचर कृष्णके वशमें है ॥ १५ ॥

इंद्रियाणि मनो बुद्धिःसत्त्वं तेजो बलं धृतिः॥
वासुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ एव च १६

इंद्रियाँ मन बुद्धि अंतःकरण तेज बल धृति क्षेत्र क्षेत्रज्ञ यह वासुदेवके आत्मस्वरूप हैं ॥ १६ ॥

सर्वागमानामाचारःप्रथमं परिकल्पते॥ आचारप्रभवो धर्मो धर्मस्य प्रभुरच्युतः ॥१७॥

सब वेदोंमें प्रथम आचार पहिला धर्म है धर्मका रक्षक अच्युत है ॥ १७ ॥

ऋषयःपितरो देवा महाभूतानि धातवः ॥ जंगमाजंगमं चेदं जगन्नारायणोद्भवम्॥ १८

ऋषि पितर देवता महाभूत सब धातु और जंगम स्थावर यह सब नारायणसे उत्पन्नहैं ॥ १८ ॥

योगोज्ञानंतथासांख्यंविद्याःशिल्पादिकर्मंच वेदाःशास्त्राणिविज्ञानमेतत्सर्वंजनार्दनात् १९

योग ज्ञान सांख्य विद्या शिल्पविद्यासे अदिलेकर कर्म वेदशास्त्र विज्ञान यह सब जनार्दन हुए हैं॥ १९॥

एको विष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः॥त्रीँल्लोकान्व्याप्यभूतात्मा भुंक्ते विश्वभुगव्ययः

एक विष्णु महाभूत जुदा जुदा हुआ अनेक हैं तीनों लोकमें व्यापक होकर वो भूतोंका आत्मा अव्यय नाम नाशरहित भोगकरता है ॥ २० ॥

इमस्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम्॥
पठेद्यइच्छेत्पुरुषःश्रेयःप्राप्तुं सुखानि च२१॥
यह स्तोत्रभगद्विष्णुका व्यासजीने भलिभांति कहाहै
जो पुरुषअपनाकल्याणऔरसुखचाहै सो पाठकरै २१
विश्वेश्वरमजं देवंजगतः प्रभवाप्ययम्॥भजं-
ति ये पुष्कराक्षं न ते यांति पराभवम्२२इति

जगत्के ईश्वर जन्मरहित प्रकाशवान् जगत प्रभु
नाश रहित कमलकी सी आंखवालेकोजो भजता है
नाम सेवा करता है वह पराभव नाम अनादरको नहीं
पावता॥ २२ ॥

इति श्रीमहाभारतके शांतिपर्वमें दानधर्मके उत्तर
व्यासजीका बनाया हुआ विष्णुसहस्रनामस्तोत्रसंपूर्ण

॥ श्रीरस्तु ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर"स्टीम् यन्त्रालयाध्यक्ष-मुंबई.